# चारू मजूमदार की विचारधारात्मक, राजनैतिक व सांगठनिक लाइन : एक आलोचना

## I

''विचारधारात्मक और राजनैतिक दिशा का
सही या गलत होना हर चीज को तय करता है।'' –माओ

माओ की यह बात, देश–दुनिया के कम्युनिस्ट आंदोलन के मूल्यांकन व किसी लाइन का भविष्य क्या हो सकता है के संदर्भ में, अत्यंत महत्वपूर्ण व शिक्षाप्रद है। इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में भविष्य की राह खोजने के लिए जब हम अतीत की पड़ताल करते हैं तो हमें एक ऐसा सूत्र चाहिए जो हमें वह कसौटी व आधाार प्रदान करे जिसमें हम अपने पूर्ववर्तियों के योगदान व मूल्यांकन में वैज्ञानिक व वस्तुगत नजरिये का परिचय दे सकें। मूल्यांकन और सबक निकालना निहायत ही जोखिम भरा काम है। वह इसलिए भी कि यदि सही सूत्र व कसौटी के साथ सही पद्धति का प्रयोग नहीं किया गया तो भानुमती का ऐसा पिटारा खुल सकता है जिसे भानुमती तो क्या उसका पूरा कुनबा भी संभाले नहीं संभाल सकता है।

देश दुनिया के इतिहास में ऐसी ढेरों शख्सियत रही हैं जिन्हें उनकी तमाम कमजोरियों, भूलों के बावजूद जनता से बहुत प्यार व सम्मान मिला। इस के साथ उनकी अपनी विशिष्ट प्रतिष्ठा रही है। विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन में यदि ऐसे व्यक्ति के रूप में चे ग्वेरा की चर्चा की जा सकती है तो भारत में चारू मजूमदार की। वे भारत के राष्ट्रीय व कम्युनिस्ट आंदोलन की पैदाइश थे। वे ऐसे समय में क्रांति को फनः एजेण्डे में ले आये जब भारत में नये व फराने किस्म के संशोधनवाद का बोलबाला हो गया था। वे भारत के उन कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों में थे जिन्होंने क्रांति के लिए वह सब कुछ किया जो उनकी सामर्थ्य में था। उन्होंने क्रांति के लिए अपने प्राण भी न्यौछावर कर दिये। चारू मजूमदार और उनके जैसे कई क्रांतिकारियों के संशोधनवाद के खिलाफ किये गये संघर्ष व जनता के हितों के लिए अपने प्राणों का भी बलिदान करने व उसके लिए नये–नये वारिस पैदा करने का नतीजा है कि भारत में आज भी कम्युनिस्ट आंदोलन मौजूद है। मार्क्सवाद–लेनिनवाद– माओ विचारधारा का झण्डा रौशन है।

प्रस्तुत लेख में चारू मजूमदार की विचारधारात्मक–राजनैतिक व सांगठनिक लाइन की आलोचना की गयी है। यद्यपि यह बात ध्यान में रखनी होगी कि उनका समग्र और उन्नत मूल्यांकन भारत में भविष्य में बनने वाली अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ही कर सकती है।

चारू मजूमदार की विचारधारात्मक–राजनैतिक व सांगठनिक लाइन की आलोचना करने के लिए हमने उनके द्वारा लिखे गये दस्तावेजों, लेखों, उनके समकालीनों के लेखों–दस्तावेजों को ही आधार बनाया है। इन दस्तावेजों व लेखों का संकलन **1993** में सुनीति कुमार घोष के सम्पादकत्व में 'The Historic-turning-Point A Liberation Anthology' के नाम से प्रकाशित हुए थे। मूल बांग्ला से अंग्रेजी में अनुवाद सुनीति कुमार घोष ने ही किये थे। चारू मजूमदार के प्रसिद्ध आठ दस्तावेज ¼1965-67) के लिए हमने Historical And Polemical Document's of The Communist Movement in India Vol-II ¼1964-72) को आधार बनाया है। ये दस्तावेज तेरीमेला नागीरेड्डी मेमोरियल ट्रस्ट (विजयवाड़ा) ने **2008** में प्रकाशित किये थे। इस लेख में जहां कहीं भी चारू मजूमदार के दस्तावेजों अथवा लेखों के उद्धरण प्रस्तुत किये गये हैं उनका हिंदी में अनुवाद हमारा है।

यहां यह सवाल उठना लाजिमी है कि चारू मजूमदार की लाइन की आलोचना क्यों आवश्यक है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि चारू मजूमदार की माकपा–भाकपा के संशोधनवाद के खिलाफ चल रहे संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के बावजूद, उनकी लाइन मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा की रोशनी में कई किस्म के गम्भीर विचलनों व गलतियों से युक्त ही नहीं थी बल्कि वह भारत की सामाजिक परिस्थितियों से भी बेमेल थी। अति वामपंथी भटकावों से युक्त इस लाइन का प्रभाव आज तक भारत के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में मौजूद है। हालांकि चारू मजूमदार के नाम की माला सुबह शाम जपने वालों में से कइयों ने चारू की लाइन को व्यवहार में या तो पहले ही त्याग दिया है या फिर उसमें कई बदलाव चुपचाप कर डाले हैं। वे क्यों पहले उस लाइन पर चल रहे थे और अब उन्होंने जो फेरबदल किये हैं उसका आधार क्या है इस पर उन्होंने कभी भी खुलकर बातें नहीं की। अपनी आत्म आलोचना नहीं की। (इस मामले में सबसे निकृष्ट किस्म का व्यवहार सीपीआई (एम एल–लिबरेशन) ने किया। खैर! इन पतित तत्वों से कुछ भी सकारात्मकता की उम्मीद नहीं की जा सकती है।

वैसे तो ऐसी कई बातें स्वयं चारू ने अपने जीवन काल में भी की थी और कभी उन्होंने भी अपने मत में बदलाव की वैज्ञानिक ढंग से जांच–पड़ताल या आत्म आलोचना नहीं की थी। चारू मजूमदार की ऐसी कई बातों की आगे चर्चा की जायेगी।

चारू मजूमदार की लाइन में कई फेरबदल करने के बावजूद भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) ने भी कमोवेश इस मामले में मौन साध रखा है। अतीत की जो गलतियां आज तक चारू मजूमदार की लाइन की वजह से जारी हैं यदि उन्हें मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा की रोशनी में ठीक नहीं किया गया तो भारत का कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन ठीक व सही दिशा में आगे नहीं बढ़ पायेगा। अफसोस की बात यह है कि उन्होंने अपनी नवीं कांग्रेस में चारू मजूमदार और कन्हाई चटर्जी को जो मेल कराया है वह प्रतीकात्मक नहीं है बल्कि गम्भीर किस्म का भटकाव व अरसरवाद है।

कदाचित चारू मजूमदार की विचारधारात्मक–राजनैतिक लाइन के मुकाबले उनकी सांगठनिक लाइन का प्रभाव और अधिक व्यापक रहा है। और एक मामले में वह चारू के साथ–साथ कई कम्युनिस्ट नेताओं व ग्रुपों की आम लाइन व कार्य शैली रही है। इस पक्ष की अपेक्षाकृत अधिक आलोचना हुई है परन्तु इसके कई गलत पक्ष किसी न किसी रूप में आज भी आंदोलन में मौजूद हैं। आवश्यक है कि इनके शीघ्रातिशीघ्र सही ढंग से छुटकारा पाया जाये। वाम संकीर्णतावाद लाइन ने, पिछले चार दशकों में, भारत के क्रांतिकारी आंदोलन का बहुत नुकसान किया है और इसके कारण आज भी भारी नुकसान हो रहा है।

इस लेख में, हम पहले चारू मजूमदार की विचारधारात्मक–राजनैतिक लाइन फिर सांगठनिक लाइन की पड़ताल करेंगे।

# II

# चारू मजूमदार की विचारधारात्मक–राजनैतिक लाइन

चारू मजूमदार की विचारधारात्मक–राजनैतिक लाइन के दो पक्ष हैं। एक पक्ष जहां उनके सकारात्मक विचारों व भूमिका का है वहीं दूसरा पक्ष उनके चिंतन व व्यवहार में मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा से गंभीर विचलन और भटकाव का है।

आइये पहले चारू मजूमदार की सकारात्मक भूमिका पर विचार करें।

सर्वप्रथम चारू मजूमदार के जिस कार्य के लिए उन्हें भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन में हमेशा याद किया जायेगा, वह है, उनके द्वारा भाकपा और खास तौर पर माकपा के संशोधनवाद कि खिलाफ संघर्ष छेड़ने और उसे व्यापकतम रूप देने में निभायी गयी श्रेष्ठ भूमिका।

माकपा **1964** में अस्तित्व में आयी थी। आज हम अच्छी तरह से जानते हैं कि इस नयी पार्टी ने भाकपा की तरह ही संशोधनवाद की ही राह अपनाई थी। चारू मजूमदार भारत के उन क्रांतिकारियों में थे जिन्होंने इस बात को सबसे पहले समझ लिया था। चारू मजूमदार के मशहूर 'आठ दस्तावेज' के पहले चार दस्तावेज **1965** में ही सामने आ गये थे। इन दस्तावेजों के शीर्षक थेऋ 'वर्तमान परिस्थिति में हमारे कार्यभार' (**28** जनवरी **1965**) (Our Tasks in Present Situation), 'संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष करके जनता की जनवादी क्रांति को सफल बनाएं' (Make the People's Democratic Revolution Successful by Fighting Against Revisionism), 'भारत के स्वतः स्पूफर्त क्रांतिकारी विस्फोट का स्रोत क्या है' (What is the source of the Spontaneous Revolutionary outburst in india, **9** अप्रैल, **1965**) आधुनिक संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष जारी रखें' (Carry on the Struggle Against Modern Revisionism)। इन दस्तावेजों ने माकपा के संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष छेड़ने और क्रांति के प्रश्न को फनः एजेण्डे में लाने में सकारात्मक भूमिका निभायी। इन दस्तावेजों में चारू मजूमदार ने भारत के शासक वर्ग के बढ़ते संकट और कम्युनिस्टों की भूमिका, क्रांतिकारी संगठन बनाने की आवश्यकता और उसकी योजना, संशोधनवाद की तीव्र आलोचना, कृषि क्रांति और नये लोक जनवादी भारत के साथ–साथ भारत के शासक वर्ग के संकीर्ण राष्ट्रवाद आदि की चर्चा की थी।

बाद के चार दस्तावेजों के शीर्षक थे 'वर्ष **1965** किस संभावना की ओर इशारा कर रहा है?' (What Possibility the Year 1965 is Indicating?), 'आज का मुख्य लक्ष्य संशोधनवाद के खिलाफ समझौता विहीन संघर्ष करते हुए सच्ची क्रांतिकारी पार्टी का निर्माण है' (The Main Task Today is the Struggle to Build Up the True Revolutionary Party Through Uncompromising Struggle Against Revisionism, **12** अगस्त **1966**) सातवां दस्तावेज 'इस अवसर का लाभ उठायें' (Take This Opportunity), आठवां दस्तावेज– 'संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष करते हुए ही किसान संघर्षों को आगे ले जाना होगा' (It is by Fighting Against Revisionism that the Peasant Struggle will Have To Be Taken Forward)।

इनमें सातवां दस्तावेज 'कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया माओइस्ट सेंटर' के नाम से जारी किया गया था। इसका प्रतीकात्मक महत्व ही है ऐसा कोई सेन्टर अस्तित्व में नहीं आया था। पांचवें दस्तावेज में **1965** भारत–पाक युद्ध और भारत के आक्रमण के साथ अंधराष्ट्रवाद की आलोचना तथा गृह युद्ध का आह्वान था। छठे, सातवें व आठवें दस्तावेज में संशोधनवाद की तीव्र आलोचना, माओ विचारधारा को अपनाने के साथ कृषि क्रांति का आह्वान था।

इन आठ दस्तावेजों की इस लेख में आगे क्योंकि बार–बार चर्चा होगी अतः अभी हम इनके विस्तार में नहीं जा रहे हैं।

चारू मजूमदार के संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष छेड़ने के अलावा उनकी कई अन्य बातों को भी उनके सार्थक योगदान में लिया जा सकता है। इन बातों का महत्व विशेष तौर पर इसलिए बन जाता है कि उस समय भाकपा–माकपा पूरी तौर पर भारत के बुर्जुआ वर्ग के पिछलग्गू बन चुके थे और कुछ किन्तु परन्तु के साथ बुर्जुआ वर्ग के हितों के अनुरूप ही अपने विचार और कार्यनीति को तय करते थे। इस संदर्भ में चारू मजूमदार द्वारा बुर्जुआ राष्ट्रवाद तथा अंधराष्ट्रवाद की घोर आलोचना विशेष रूप से जिक्र करने लायक है।

चारू मजूमदार ने **1962** में भारत द्वरा चीन पर किये गये आक्रमण की तीव्र निन्दा की। उन्होंने लिखा,

> ''लेकिन बुर्जुआ ने जनता के जुझारू तेवरों को समझने में कोई गलती नहीं की। इसलिए आतंकित भारत सरकार ने लड़ाकू जनता के संघर्षों के स्रोत पर हमला किया, उसने महान चीनी जनवाद पर हमला किया।'' (दस्तावेज **3** पेज.**214**)

इसी तरह से उन्होंने चौथे दस्तावेज में लिखा,

> ''**(2)** आज जो सवाल महत्वपूर्ण बन गया है वह है बुर्जुआ राष्ट्रवाद। यह राष्ट्रवाद बेहद संकीर्ण है और यह संकीर्ण राष्ट्रवाद आज शासक वर्ग के हाथ में सबसे बड़ा हथियार है। इस हथियार का इस्तेमाल वे न केवल चीन के मामले में बल्कि पाकिस्तान की तरह के किसी भी मामले में कर रहे हैं। राष्ट्रीय एकता के नारे व अन्य नारों को उछालकर वे एकाधिकारी पूंजी के शोषण की रक्षा करना चाहते हैं। हमें यह ध्यान रखना होगा कि भारत की एकता की चेतना साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन का परिणाम है। भारत सरकार साम्राज्यवाद के साथ जिस तरह समझौतापरस्ती कर रही है उससे एकता की चेतना की नींव दरक रही है। इस एकता के नारे को देने के पीछे वर्तमान शासक वर्ग का एक ही उद्देश्य है वह है एकाधिकारी पूंजी के शोषण के लिए एकता को बनाये रखना। इसलिए यह नारा प्रतिक्रियावादी है और मार्क्सवादियों को अवश्य ही इस नारे का विरोध करना चाहिए। भारत के शासकों द्वारा दिया गया 'कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है' नारा लूट के वास्ते है। कोई भी मार्क्सवादी इसका समर्थन नहीं कर सकता है। हर मार्क्सवादी का यह बुनियादी कर्तव्य है कि वह हर राष्ट्रीयता के आत्मनिर्णय के अधिकार को स्वीकार करे। कश्मीर, नागा आदि मामलों में मार्क्सवादियों को निश्चित रूप से योद्धाओं का समर्थन करना चाहिए।'' (दस्तावेज -4, पेज.**215**.**216**, वही)

भारत के शासक वर्ग के प्रतिक्रियावादी राष्ट्रवाद की चारू मजूमदार ने अपने अन्य दस्तावेजों व लेखों में तीखी आलोचना की है। यहां यह बात गौर करने लायक है कि वे अभी भारत के शासक वर्ग को स्वतंत्र पूंजीपति वर्ग के रूप में देखते थे ना कि दलाल के रूप में।

**1965** में भारत द्वारा पाकिस्तान पर हमले के समय उन्होंने शासक वर्ग द्वारा फैलाये गये अन्धराष्ट्रवाद की अलोचना की और क्रांतिकारियों से इस परिस्थिति का लाभ उठाकर गृहयुद्ध छेड़ने का आह्वान किया। हालांकि इसे उस वक्त हिरावलवादी आह्वान कहा जा सकता है। **1965** की तरह ही चारू मजूमदार ने **1971** में भारत के द्वारा पाकिस्तान के विभाजन और बांग्लादेश के निर्माण में निभायी गयी हस्तक्षेपकारी भूमिका की विस्तारवाद कह कर आलोचना की थी। जैसे हम पहले कह आये हैं चारू मजूमदार ने ये सब सही बातें तब की थी जब भाकपा–माकपा थोड़ी बहुत भिन्नता के साथ निर्लज्जतापूर्वक भारत के शासक वर्ग का साथ दे रही थीं और उन्होंने भी क्रांतिकारी कम्युनिस्टों के निर्मम दमन में भारत के शासक वर्ग का साथ दिया था और आज भी दे रही हैं। आत्म निर्णय के अधिकार के बारे में माकपा तो भाकपा से भी अधिक प्रातिक्रियावादी भूमिका निभाने लगी और कई मामलों में तो उसने बुर्जुआ जनवादी पार्टियों व व्यक्तियों से भी कई कदम पीछे की भूमिका निभायी। माकपा तो भारतीय पूंजीवादी संविधान के दायरे में भी नये राज्यों के निर्माण के पक्ष में नहीं रही है।

चारू मजूमदार ने राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर भी संशोधनवाद की आलोचना कर भारतीय क्रांति के कार्यकर्ताओं को शिक्षित–दीक्षित किया और इस मामले में माओ के नेतृत्व में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष को मजबूती प्रदान की। ऐसे ही उन्होंने ढेरों समय अंतर्राष्ट्रीयतावाद की एक सच्चे कम्युनिस्ट की तरह रक्षा की।

चारू मजूमदार की लाइन की अब उन बातों को हम उठायेंगे जो मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा की दृष्टि में एकदम गलत हैं। कुछ उपशीर्षकों के तहत हम इनकी चर्चा करेंगे।

# सिद्धान्तों के प्रति उपेक्षा का भाव व उनका सरलीकरण

एक मार्क्सवादी–लेनिनवादी के लिए क्रांतिकारी सिद्धान्तों का महत्व कितना अधिक होता है इसे हम लेनिन के उस सटीक सूत्र से समझ सकते हैं जिसमें उन्होंने कहा था कि 'क्रांतिकारी सिद्धान्त के बिना क्रांतिकारी आंदोलन असम्भव है।' (क्या करें?) लेनिन ने इस फस्तक में क्रातिकारी सिद्धान्त के महत्व पर जो बातें कहीं वह कम्युनिस्टों के लिए सदा ही मार्गदर्शक हैं।

अब यदि इस संदर्भ में चारू मजूमदार के विचारों को परखें तो हम पायेंगे कि वे औपचारिक तौर पर तो मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा की बात करते हैं परन्तु व्यावहारिक तौर पर वे इसे यथोचित स्थान नहीं देते हैं। अक्सर ही वे ऐसी बातें कर देते हैं जो मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा के हिसाब से ठीक नहीं रही हैं। यहां इसके अतिरिक्त जिस बात का अत्यधिक बोलबाला है वह है सरलीकरण करने की गलत प्रवृत्ति।

चारू मजूमदार के लेखों व दस्तावेजों में सिद्धान्त के प्रति उपेक्षा का रुख लगातार दिखायी देता है। अपने पहले ही दस्तावेज में जब वे एक क्रांतिकारी संगठन बनाने की योजना पेश करते हैं तो वे क्रांतिकारी सिद्धान्त पर एक भी शब्द नहीं कहते हैं। कोई कह सकता है कि यह अंतर्निहित बात है परन्तु यह ठीक नहीं है। जब आप संगठन बनाने के लिए इतनी बातें करते हैं तो आप सिद्धान्त को कैसे भूल जाते हैं। क्यों नहीं आप लेनिन, स्टालिन व माओ की आम प्रचलित बातों को भी औपचारिक ढंग से भी नहीं दुहराते हैं। चारू लिखते हैं,

> ''एक क्रांतिकारी संगठन बनाने के लिए मुख्य आधार क्या होगा? कामरेड स्टालिन ने कहा है : 'एक क्रांतिकारी संगठन बनाने के लिए मुख्य आधार क्रांतिकारी कार्यकर्ता होते हैं।' एक क्रांतिकारी कार्यकर्ता कौन है? एक क्रांतिकारी कार्यकर्ता वह है जो परिस्थिति का अपनी पहल से विश्लेषण कर सकता है और उसके अनुसार नीतियां अपना सकता है। वह किसी की मदद का इंतजार नहीं करता है।'' (चारू मजूमदार, दस्तावेज.**1** **'Our Tasks in the Present Situation'** पेज. **207** पैरा.**2,** वही)

यहां एक तो स्टालिन को गलत ढंग से उद्धृत किया हुआ है और दूसरा यहां क्रांतिकारी सिद्धान्त की कोई चर्चा नहीं है। स्टालिन की बात यह है कि यदि एक बार राजनीतिक कार्यदिशा निर्धारित कर दी गई, तो कार्यकर्ता एक निर्णायक तत्व बन जाते हैं। निम्न बुर्जुआ प्रवृत्तियों को प्रश्रय देने के साथ यहां स्वेच्छाचारिता व स्वतः स्फूर्तता का गुणगान है।

एक अन्य स्थान पर चारू ने माओ को गलत ढंग से उद्धृत करते हुए विद्यार्थियों और युवाओं को स्कूली शिक्षा व अध्ययन के प्रति हतोत्साहित किया है। चारू ने कहा,

> ''इसलिए चेयरमैन माओ ने कहा है जितना आप पढ़ोगे उतना ही मूर्ख बनोगे'' **(**'Leave your Schools and colleges and plunge in to Revolutionary Struggle' pk: 'Few Words to the Revolutionary Students and Youth', पेज. **89,** पैरा. **2,** वही)

इस लेख में चारू मजूमदार ने भारतीय स्कूलों व कालेजों में पढ़ाये जाने वाली बातें व शिक्षा व्यवस्था की आलोचना की थी और उनसे स्कूल–कालेजों को छोड़ने का आह्वान किया था। शिक्षा व्यवस्था के प्रति माओ का रवैया भी आलोचनात्मक रहा है। माओ ने जो कहा है वह इस प्रकार है,

> ''जितना आप पढ़ोगे उतने ही आप मूर्ख बनोगे। आप परिवर्तन के एक महत्वपूर्ण काल से गुजर रहे होऋ इसलिए आपको सही तरह से सीखना चाहिये।'' (माओ, the Documents of the GPCR in China, ist-25, Vol-1, अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन)

असल में चारू के आह्वान में एक तरफ हिरावलवादी रुझान तो दूसरी तरफ शिक्षा के प्रति गैर ऐतिहासिक दृष्टिकोण मौजूद है। चारू मजूमदार अपने लेखों में कई दफा ये बात लिखते हैं कि कार्यकर्ताओं को माओ के उद्धरण व माओ के तीन लेख ही पढ़ने पर्याप्त हैं। ये तीन लेख 'जनता की सेवा करो', 'नार्मन बैथ्युन की स्मृति में', 'मूर्ख बूढ़े आदमी ने पहाड़ को कैसे हटाया' थे। चारू मजूमदार लिखते हैं,

> ''हमारे राजनैतिक प्रचारात्मक कार्य में एक अन्य गंभीर कमी है, मतलब हम आम तौर पर मजदूरों की सहायता ***चेयरमैन माओ त्से तुघ के उद्धरण*** पढ़ने में नहीं करते हैं। हम मजदूरों को इस फस्तक की एक प्रति प्राप्त करने देने में आत्मसंशयी बने रहते हैं। हालांकि हम यदि मजदूरों की स्वाभाविक क्रांतिकारी चेतना पर अपना भरोसा जतायें और उन्हें इस किताब की एक प्रति उपलब्ध करायें तो हम निश्चित रूप से आश्चर्यजनक नतीजे प्राप्त करेंगे।'' (चारू मजूमदार, Our Party's Tasks Among the workers' पेज .**88,**पैरा . **4,** वही, जोर मूल में)

चारू मजूमदार की इस तरह की बातें क्रांतिकारी आंदोलन में अच्छी खासी प्रचारित हुई और क्रांतिकारी सिद्धान्तों को अति सरलीकृत रूप में समझने की प्रवृत्ति पैदा हुई। क्रांतिकारी व्यवहार करने के दौरान आम तौर पर यह मान लिया गया कि वे क्रांतिकारी सिद्धान्त से स्वाभाविक तौर पर ही लैस हैं। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि नक्सलबाड़ी आंदोलन के दौरान उस कोटि के सिद्धान्तकार, राजनैतिक अर्थशास्त्री, इतिहासकार आदि भी पैदा नहीं हुए जैसे कि भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन में कम से कम पचास के दशक तक पैदा हुए थे।

इस लेख में जैसे–जैसे हम आगे बढ़ेंगे वैसे–वैसे हम यह पायेंगे कि चारू मजूमदार ने अक्सर ही मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा की सुस्थापित मान्यताओं व सिद्धान्तों के स्थान पर सहजबोध, अनुभववाद के साथ नितांत व्यवहारिकतावाद (Pragmatism) का परिचय दिया।

चारू मजूमदार अपने समय में, एक तरफ संशोधनवाद के खिलाफ झण्डा बुलंद करने वाले तथा संशोधनवादी रास्ते पर चल चुकी माकपा को छोड़कर, एक नई पार्टी बनाने वाले प्रमुख व्यक्ति थे। परन्तु दूसरी तरफ उनकी संशोधनवाद की आलोचना सैद्धान्तिक व राजनैतिक गहराई लिए होने के स्थान पर कुछ सांगठनिक किस्म के नियमों से बंधी हुई और क्रांति के तात्कालिक व व्यावहारिक (जो उनके अनुसार होते थे) प्रश्नों पर क्या रुख अपनाया जा रहा है से निर्देशित होती थी।

दिसम्बर **1964** में कलकत्ता में **CPI (M)** के रूप में एक नई पार्टी अस्तित्व में आ गयी थी। यह पार्टी भाकपा के संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष करते हुए अस्तित्व में आयी थी। चारू मजूमदार ने अपने सातवें दस्तावेज में इस पार्टी के अस्तित्व में आने के बाद संशोधनवाद के खतरे के संदर्भ में जो बातें कहीं वह उसी बात को फष्ट करती हैं जो ऊपर लिखी गयी हैं। चारू ने लिखा,

> ''एक अलग पार्टी बना देने का यह अर्थ नहीं है कि संशोधनवाद के खिलाफ लड़ाई समाप्त हो गयी है। संशोधनवाद साम्राज्यवाद, सामंतवाद और प्रतिक्रियावादी शक्तियों से लड़ने की बात करता है परन्तु व्यवहार में वह इन शक्तियों से सहयोग के

मार्ग को चौड़ा करता है। मार्क्सवाद–लेनिनवाद इन शक्तियों का दृढ़तापूर्वक विरोध करता है, उनके हर आक्रमण का बदला लेता है और इन शक्तियों को नष्ट करने के लिए जनता को लम्बे चलने वाले संघर्ष के लिए गोलबंद करता है। फराने विचार अपने को (I) अंतर्राष्ट्रीय संशोधनवाद के खिलाफ महान चीनी पार्टी के नेतृत्व को न स्वीकारने, (II) नयी उभरती हुई शक्तियों को न स्वीकारने, (III) मजदूर वर्ग की चेतना को इस नये एहसास के अनुरूप न ढालने, (IV) किसान जो कि मजदूर वर्ग के मुख्य सहयोगी हैं के संघर्षों में मदद न करने के रूप में अपने को प्रकट करता है।'' (चारू मजूमदार, Document Seven, 'Take this Opportunity', वही)

**1966–67** में लिखे गये इन दस्तावेजों में हम चारू के उन विचारों को भ्रूण रूप में देख सकते हैं जो बाद में विकसित होकर ठोस रूप ग्रहण कर लेते हैं। जैसे यहां जिस ढंग की कसौटी उन्होंने फराने विचारों को परखने के लिए रखी है वैसी ही कसौटी वे सीपीआई (एम एल) के गठन और उसमें शामिल होने वाले विभिन्न व्यक्तियों और ग्रुपों के संदर्भ में भी रखते हैं।

# लिन पियाओ के विचारों का असर

लिन पियाओ के कई गलत विचारों का असर चारू मजूमदार और अन्य लोगों पर था। यह न केवल लिन पियाओ द्वारा माओ विचारधारा को परिभाषित करने और खासकर उस संदर्भ में दी गयी युग की अवधारणा से बल्कि अन्य अनेक मसलों पर उनकी धारणाओं से स्पष्ट हो जाता है।

लिन पियाओ ने **16** दिसम्बर **1966** को माओ विचारधारा को परिभाषित करते हुए लिखा,

''माओ विचारधारा एक ऐसे युग का मार्क्सवाद–लेनिनवाद है जिसमें साम्राज्यवाद पूर्ण ध्वंस तथा समाजवाद विश्वव्यापी विजय की ओर बढ़ रहा है।'' (लिन पियाओ, माओ त्से तुंग के उद्धरण की भूमिका, अनुवाद हमारा)

लिन पियाओ की यह परिभाषा पूर्णतः गलत है। यह युग सम्बन्धी लेनिनवादी धारणा को गलत ढंग से बदल देती है। स्तालिन ने लेनिनवाद को परिभाषित करते हुए कहा था कि लेनिनवाद, साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रांतियों के युग का मार्क्सवाद है। लेकिन लिन पियाओ युग की अवधारणा को बदल देता है। इस युग की धारणा के बदलाव के पीछे तुरत–फफरत क्रांतियों को सम्पन्न करने का 'वामपंथी' भटकाव ऊपरी तौर पर दिखाई देता है। लेकिन इसका सारतत्व दक्षिणपंथी है।

आज हम भली भांति जानते हैं कि मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा के अनुसार, समाजवाद की विश्वव्यापी विजय कुछ वर्षों में नहीं बल्कि लम्बे कालखण्ड में ही सम्भव हो सकती है। माओ समाजवाद की ऐसी दीर्धकालिक अवस्था की बात करते हैं जो कई दशकों तक नहीं बल्कि कई शताब्दियों तक जाती है।

इस गलत परिभाषा के जरिये लिन पियाओ ने एक ऐतिहासिक प्रवृत्ति को तात्कालिक प्रवृत्ति में बदल डाला था। इसका असर चारू मजूमदार और अन्य कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों पर पड़ा था।

चारू मजूमदार के कई लेखों और भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माले) के दस्तावेजों में इस गलत परिभाषा का असर देखा जा सकता है।

आज भी भारत के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में इस गलत परिभाषा का प्रभाव मौजूद है।

इसने चारू मजूमदार के भीतर पहले से मौजूद निम्न पूंजीवादी अधैर्य की प्रवृत्ति को और ज्यादा बढ़ाने में मदद की। सर्वाधिक इसने चारू मजूमदार में सिद्धान्तों के प्रति उपेक्षा के भाव को और ज्यादा मजबूत किया।

सिद्धान्तों के प्रति उपेक्षा के भाव का एक परिणाम यह भी था कि धैर्यपूर्वक विचारधारात्मक–राजनीतिक संघर्ष का माद्दा चारू मजूमदार में नहीं था। यह बात सही है कि भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.) के नव संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष में अन्य लोगों के अलावा चारू मजूमदार ने भूमिका निभाई थी।

नक्सलबाड़ी किसान उभार ने संशोधनवाद के साथ विच्छेद कर दिया था लेकिन नवसंशोधनवादी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.) के भीतर कम्युनिस्ट क्रांतिकारी कतारें अब भी मौजूद थीं। अलग–अलग राज्यों में कुछ लोग ही विद्रोह करके तालमेल कमेटी और बाद में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) में शामिल हुए थे। यदि भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.) के भीतर क्रांतिकारी कतारों के बीच अपेक्षाकृत लम्बे समय तक विचारधारात्मक संघर्ष चलाया जाता तो बड़ी तादाद में क्रांतिकारी कतारों को क्रांतिकारी राजनीति के पक्ष में लाया जा सकता था। आंध्र प्रदेश के कामरेडों ने यह संघर्ष चलाकर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.) के अधिकांश कार्यकर्ताओं को क्रांतिकारी राजनीति के पक्ष में खड़ा कर लिया था। लेकिन चारू मजूमदार में निम्न पूंजीवादी अधैर्य इस संघर्ष को चलाने में बाधक था।

इस निम्न पूंजीवादी अधैर्य को हम अन्य प्रश्नों पर उनके रुख में भी देख सकते हैं। इसे क्रांति की तुरत–फफरत विजय की भविष्यवाणी में देखा जा सकता है। यहां उनके कुछ उद्धरण है,

''बंगाल के छात्र और युवाओं की शानदार विरासत रही है। इसलिए यदि आप इस लक्ष्य के लिए ईमानदारीपूर्वक कार्य करेंगे, मैं आपको आश्वस्त करता हूं कि जन मुक्ति सेना बंगाल के विस्तृत मैदानों में **1971** के शुरू में मार्च करेगी, यदि ऐसा **1970** में सम्भव नहीं हो पाया तो।'' (चारू, । Few Words to the Revolutionary Student and Youth, liberation Anthology page.95, अनुवाद हमारा)

***''विजय का दिवस नजदीक है''***

''जब मैं कहता हूं कि सत्तर के दशक को मुक्ति का दशक बनाओ'', तो मैं **1975** से आगे की नहीं सोचता हूं। आज के सशस्त्र संघर्ष का विचार पहले एक आदमी के दिमाग में जन्मा था। अब यह विचार एक करोड़ लोगों के दिमाग में भरा हुआ है। यदि जब नयी क्रांतिकारी चेतना जो केवल **1967** में पैदा हुई थी, **1970** में एक करोड़ लोगों के दिमाग में पहुंच चुकी हो तो यह क्यों असंभव है कि एक करोड़ लोग **50** करोड़ लोगों को **1975** में लोक युद्ध के लिए उमड़ पड़ने के लिए जगा और आंदोलित न कर दें।'' (चारू, March onwards, Day of victory is near वही, पृष्ठ.**112–113,** अनुवाद हमारा)

यहां पर आनन–फानन में क्रांति की विजय की घोषणा की गयी है तथा साथ ही, इस बात का जिक्र किया गया है कि सशस्त्र संघर्ष का विचार **1967** में एक व्यक्ति के दिमाग में जन्मा था। स्वाभाविक है कि चारू मजूमदार की निगाह में वह व्यक्ति खुद चारू मजूमदार ही होंगे। यहां क्रांति की वस्तुगत परिस्थितियां एवं आत्मगत शक्तियों की तैयारी इत्यादि का कोई उल्लेख नहीं है। बल्कि ऐसा जिक्र किया गया है कि मानो नक्सलबाड़ी का विचार पहले पहल चारू मजूमदार के दिमाग में आया था। बाद के दिनों में यह प्रचारित भी किया गया कि नक्सलबाड़ी के जनक चारू मजूमदार थे। चारू मजूमदार के नेतृत्व में गठित भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) द्वारा प्रकाशित लेखों में इसका जिक्र बार–बार किया गया था।

पहले यह प्रचारित किया गया कि चारू मजूमदार के आठ दस्तावेजों के आधार पर नक्सलबाड़ी किसान उभार खड़ा हुआ था। बाद में नक्सलबाड़ी के जनक के रूप में चारू मजूमदार को कहा जाने लगा। जबकि नक्सलबाड़ी किसान उभार के खड़ा होने की स्थिति बिलकुल और थी। इस बात को नक्सलबाड़ी के नेता कानू सान्याल ने **1973** में अपने लेख 'नक्सलबाड़ी के बारे में कुछ और' (More About

Naxalbari) में खुद नक्सलबाड़ी में दो लाइनों के बीच टकराव का जिक्र किया है और चारू मजूमदार के आठ दस्तावेजों की भूमिका का जिक्र किया है।

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना कांग्रेस से ही कम्युनिस्ट क्रांतिकारी कार्यकर्ता छला हुआ महसूस करते थे। उन्होंने कांग्रेस के बाद जगह–जगह भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.) के भीतर रहते हुए संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष करने और सही कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के लिए ग्रुप व केन्द्रक के बतौर काम करना शुरू कर दिया था। इसी के साथ ही जुझारू जनांदोलनों को नेतृत्व देने के काम में वे लग गये थे। दार्जिलिंग जिले में किसान क्रांतिकारी आंदोलन को विकसित करने का काम दार्जिलिंग जिले की भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.) कर रही थी। इस जिला कमेटी के सचिव चारू मजूमदार थे। चारू मजूमदार ने **1965–67** के दौरान आठ लेख लिखे थे, जिन्हें बाद में 'आठ दस्तावेज' के बतौर जाना गया। इन लेखों में संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष करके एक क्रांतिकारी पार्टी बनाने तथा किसान सशस्त्र संघर्ष के जरिये किसान क्रांति की बातें की गयी थी।

इसी दौरान इस जिले में नक्सलबाड़ी किसान उभार खड़ा हुआ। हालांकि नक्सलबाड़ी किसान उभार जन दिशा पर आधारित था और चारू मजूमदार की लाइन इससे इतर थी। इन आठ दस्तावेजों के बारे में और इनके प्रभाव के बारे में बाद में कानू सान्याल ने यह लिखा था,

> ''संक्षेप में, दस्तावेजों के मुख्य बिन्दु थे : सी.पी.आई. (एम) एक संशोधनवादी पार्टी है और इसे बेनकाब करना चाहिएॠ चीन का रास्ता भारत की मुक्ति का रास्ता हैॠ सशस्त्र संघर्ष तात्कालिक कार्यभार हैॠ गुप्त हमलावर ग्रुपों (Combat Groups) का गठन फौरी कार्यभार हैॠ जोतदारों के घरों को जलाना, इन हमलावर ग्रुपों के जरिये जोतदारों पर व्यक्तिगत हमले करना और बन्दूकें इकट्ठा करनाॠ राजनीतिक अभियान नहीं 'एक्शन' लोगों को गोलबंद करेंगे और जन संगठन व जन आंदोलन की कोई आवश्यकता नहीं है। उनके साथ (चारू मजूमदार के साथ–अनु.) बहस के बाद सिलीगुड़ी स्थानीय कमेटी के नेतृत्वकारी कार्यकर्ता कुछ बिन्दुओं पर सहमत थे और अन्य बिन्दुओं पर असहमत थे। जिन बिन्दुओं पर सहमति बनी थी, वे थेॠ चीन का रास्ता भारत की मुक्ति का रास्ता हैॠ सशस्त्र संघर्ष के जरिये कृषि क्रांति पूरी की जा सकती हैॠ कृषि क्रांति की राजनीति को मजदूरों और किसानों के बीच प्रचारित करने तथा उनको गुप्त पार्टी संगठन बनाने में संगठित करने में। स्थानीय कमेटी के नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं ने जिन बिन्दुओं पर जोर दिया वे थे : मजदूरों और किसानों के जनसंगठनों और जन आंदोलनों की अपरिहार्यताॠ सी. पी.आई. (एम.) के भीतर अंतः पार्टी विचारधारात्मक संघर्ष की आवश्यकताॠ राजनीतिक कार्य और 'एक्शन' एक दूसरे के विरोध में नहीं हैंॠ इसके विपरीत 'एक्शन' अर्थहीन हो जायेंगे यदि राजनीति कमान में नहीं होगी और इसलिए राजनीतिक कार्य तैयारी के लिए आवश्यक शर्त हैॠ जन संघर्षों की आवश्यकता जिनके जरिये संघर्षों के निकाय गठित होंगे तथा शहरी क्षेत्रों में जन संगठनों की आवश्यकता। चारू बाबू ने इन बिन्दुओं पर सहमत होने से इंकार कर दिया। संक्षेप में, बिलकुल प्रारम्भ से ही दो भिन्न–भिन्न रायें थीं जिनको दो लाइनों के बीच टकराव कहा जा सकता है। इस मुकाम पर एक समझौते पर पहुंचा गया। यह निर्णय लिया गया कि स्थानीय कमेटी के कार्यकर्ता नक्सलबाड़ी क्षेत्र में अपने खुद के अनुभव के अनुसार सहमति के बिन्दुओं पर अमल करेंगे, और नये कार्यकर्ता चारू बाबू की राय के अनुसार नक्सलबाड़ी के समीप पश्चिमी दिनाजफर जिले के चातेरहाट–इस्लामफर क्षेत्र में कार्य करेंगे। चूंकि चारू मजूमदार जलपाईगुड़ी जिले के मजदूर और किसान संघर्षों से **1952** से ही जुड़े हुए थे इसलिए दार्जिलिंग जिले के कार्यकर्ता उनकी इज्जत करते थे और इसीलिए यह समझौता सम्भव हो सका।
>
> ''चातेरहाट–इस्लामफर क्षेत्र में कार्य छः दस्तावेजों के हूबहू आधार पर शुरू हुआ। गुप्त ग्रुप खड़े किये गये, थोड़ा राजनीतिक प्रचार किया गया और एक्शन शुरू कर दिये गये। यानी कि, जोतदारों के घरों को जलाने की कोशिशें हुई, रात में कुछ धान की फसल काटी गयी और बन्दूकें छीनने की योजना असफल हो गयी। चूंकि राजनीति को महत्व नहीं दिया गया, चूंकि जन संगठनों और जनआंदोलनों को संगठित करने की आवश्यकता को नजरअंदाज किया गया, इसीलिए हमालवर ग्रुपों पर आधारित एक्शन कुछ आवारा तत्वों को इकट्ठा करने की जगह बन गये। **1967** में नक्सलबाड़ी उभार के दौरान इस क्षेत्र के जोतदारों ने खास राजनीतिक पार्टी के पीछे समूचे किसान समुदाय को गोलबंद कर लिया था तथा हमलावर ग्रुप के ज्ञात कार्यकर्ताओं के घरों पर हमला बोल दिया था। जोतदार के साथ किसानों के इस हमले के सामने हमलावर ग्रुप के कार्यकर्ता किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये। परिणामस्वरूप हमलावर ग्रुप अप्रभावशाली व असंगठित हो गये। हमलावर ग्रुप के कुछ नेता और पार्टी कार्यकर्ता जोतदारों के हमलों के सामने कोई ठिकाना न मिलने पर क्षेत्र छोड़ने को मजबूर हो गये। यह याद रखना चाहिए कि जब यह सब हुआ था तो नक्सलबाड़ी अपनी बुलंदी पर था। ... ... ...'' (कानू सान्याल, More About Naxalbari P-866-67 Historical and Polemical Documents of CMI.)

कानू सान्याल के उक्त लेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि नक्सलबाड़ी किसान उभार जन दिशा पर आधारित था। जबकि चारू मजूमदार के आठ दस्तावेजों में जन दिशा का निषेध किया गया था

नक्सलबाड़ी किसान उभार के लिए कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कारक जिम्मेदार थे। इनमें सबसे पहला भारतीय शासक वर्ग के साथ व्यापक मजदूर–किसान जनता का वर्ग संघर्ष लगातार तीव्र होता जा रहा था। इसकी परिणति के बतौर भारत के **8** राज्यों में गैर कांग्रेसी संयुक्त मोर्चा सरकारों का आना था। **1967** में पहली बार **8** राज्यों में गैर कांग्रेसी सरकार सत्ता में आयी थीं। यह शासक कांग्रेस पार्टी से मोहभंग का सूचक होने के साथ ही बढ़ते वर्ग संघर्ष की एक अभिव्यक्ति थी। दूसरा, कम्युनिस्ट पार्टी का शीर्ष नेतृत्व संशोधनवादी होने के बावजूद कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर दो कार्यदिशाओं के बीच संघर्ष लगातार बढ़ रहा था। इसमें शीर्ष नेतृत्व वर्ग सहयोग की कार्यदिशा पर चल रहा था और पार्टी कतारें वर्ग संघर्ष की कार्यदिशा पर अमल कर रही थीं। यह संघर्ष तीव्र से तीव्रतर होता गया था। तीसरा, अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में दुश्चेवी संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष के दौरान जो 'महान बहस' चली, उसने भी कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों को भारत सहित समूची दुनिया में संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष करने में प्रेरणा प्रदान की थी। चौथा, चीन में **1966** में शुरू होने वाली महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के इस नारे ने कि 'विद्रोह करना न्याय संगत है', भारत सहित समूची दुनिया के कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों को यह संघर्ष करने की प्रेरणा प्रदान की कि यदि नेतृत्व संशोधनवादी हो गया हो तो उसके विरुद्ध विद्रोह करके सही दिशा पर आधारित कम्युनिस्ट पार्टी का गठन या फनर्गठन किया जाना चाहिए।

इन सभी के आच्छादनकारी प्रभाव के कारण, नक्सलबाड़ी किसान उभार पैदा हुआ था। नक्सलबाड़ी किसान उभार किसी एक नेता के दिमाग की उपज नहीं था। जैसा कि बाद के दौर में गलत तरीके से पेश किया जाता रहा है

अतः चारू मजूमदार का यह कहना कि भारत में सशस्त्र संघर्ष की बात **1967** में एक व्यक्ति के दिमाग में आयी थी, सरासर गलत है।

चारू मजूमदार की विचारधारात्मक लाइन अपने चरित्र में अति वामपंथी थी। इस विषय पर कुछ पहलुओं से चर्चा करें।

## अतिवामपंथी एवं आतंकवादी लाइन

चारू मजूमदार के आठ दस्तावेजों तथा लेखों में प्रस्तुत लाइन को यदि हम विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन के इतिहास के समक्ष रख कर विचार करें तो हम पायेंगे कि वे जो बातें कर रहे थे वे यद्यपि भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन के लिए नयी थी परन्तु अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में बार–बार, नये–फराने रूपों के साथ, प्रस्तुत एक ऐसी लाइन थी जो क्रांतिकारी संघर्ष के लिए जनता खास कर

मजदूर वर्ग के संगठन की निर्णायक भूमिका से इन्कार करती थी। चारू मजूमदार में लुई ओग्यूस्त ब्लांकी जैसे नंसीसी क्रांतिकारी से लेकर चे ग्वेरा के ''वामपंथी'' 'अराजकतावादी' विचारों के दर्शन होते हैं।

लिन प्याओ की चर्चा हम पहले ही कर चुके हैं। ब्लांकी तो कोई घोषित मार्क्सवादी नहीं थे वे तो कल्पनावादी कम्युनिज्म के प्रतिनिधि थे परन्तु चे व चारू जैसे क्रांतिकारी तो घोषित तौर पर मार्क्सवादी–लेनिनवादी थे। उनके विचारों में मार्क्सवाद–लेनिनवाद की मूलभूत बातों का अभाव, लेनिन की उस प्रसिद्ध उक्ति की याद दिला देता है जिसमें उन्होंने कहा था, 'अकसर अराजकतावाद मजदूर आंदोलन के अवसरवादी पापों के लिए एक प्रकार का दंड रहा है।' (लेनिन, ''वामपंथी कम्युनिज्म–एक बचकाना मर्ज, लेनिन संकलित रचनाएं, दस खण्डों में, खण्ड–**9**, पृष्ठ–**263**, पैरा.**2**) चारू मजूमदार के विचारों में छाया अति वामपंथ व आतंकवादी कार्यदिशा लेनिन की बातों को सौ फीसदी सही साबित करती है। भाकपा व माकपा के अवसरवाद, संशोधनवाद के पापों की सजा के रूप में ही भारत में चारू मजूमदार व भाकपा (माले) के रूप में अति वामपंथ सामने आया।

चारू मजूमदार के विचारों में अतिवामपंथ की अभिव्यक्तियों को यदि बिन्दुवार कुछ पैरों में प्रस्तुत किया जाय तो वे निम्न प्रकार होंगे। हालांकि अभी तक इस लेख में प्रस्तुत कई उद्धरणों में इसे हम स्पष्ट तौर पर देख सकते हैं।

चारू मजूमदार के दस्तावेजों व लेखों में भारत में क्रांति के लिए परिस्थितियों का ऐसा वर्णन मिलता है जो यथार्थ से मेल नहीं खाता है। वे वस्तुगत परिस्थितियों को बढ़ा–चढ़ा कर पेश करते थे और मनोगत ढंग से क्रांति का निर्धारण कर देते थे। हम देख आये हैं कि कैसे चारू मजूमदार इस बात की घोषणा कर देते हैं कि वे भारत में क्रांति को सत्तर के दशक में घटते हुए देख रहे हैं। यहां तक कि वे इसके लिए **1975** की समय सीमा भी तय कर देते हैं। क्योंकि उनका वस्तुगत परिस्थितियों का मूल्यांकन गलत था अतः उनके द्वारा किये जाने वाले आह्वान हिरावलवादी और बेकार के साबित होते थे। ये माओ द्वारा निर्देशित जन दिशा का भी घोर उल्लंघन होते थे।

उनके एक लेख '**1970** के दशक को मुक्ति का दशक बनाओ (Make the 1970's the Decade of liberation)' में उनके इस तरह के विचार, आह्वान व कार्यदिशा को बखूबी देखा जा सकता है। यह पूरा लेख वस्तुगत परिस्थितियों के बढ़े–चढ़े आकलन से भरा हुआ है। इस लेख के कुछ हिस्से हम उद्धृत कर रहे हैं,

> ''हमारी पार्टी द्वारा शुरू और गरीब व भूमिहीन किसानों द्वारा नेतृत्व वाली सफाये की लड़ाई को (the battle of Annihilation) विभिन्न क्षेत्रों में लाल राजनीतिक सत्ता कायम करने के लिए निश्चित रूप से आगे बढ़ाया जाना चाहिए और हर राज्य तथा पूरे भारत में फैलाया जाना चाहिए। गरीब और भूमिहीन किसान आत्मनिर्भर और राजनैतिक रूप से सजग बनेंगे और गुरिल्ला युद्ध (Guerrilla Warfare) छेड़ने से उनकी रचनात्मक शक्ति विकसित होगी जो आज असंभव दिखायी देता है वह कल सम्भव हो जायेगा। ... ... ...'' (पृष्ठ–**67ए** पैरा.**2**)
>
> ''साथियो, यह वक्त अपनी शक्तियों को प्रचार के कामों में फैलाने का नहीं है। एक निश्चित इलाके, एक निश्चित इकाई और एक विशेष दस्ते का चुनाव करो और सफलतापूर्वक सफाये के युद्ध को संचालित करो। उसके बाद अगली इकाई तथा अगले दस्ते को चुनो और पहले की तरह आगे बढ़ो। इस तरह अपने द्वारा चुने गये इलाके के एक तिहाई भाग पर अपने काम को केन्द्रित करो और जब उस इलाके के उस भाग पर हमारी शक्तियां मजबूत हो जायें तब शेष भाग में अपने संघर्ष को फैलाओ। यह वह तरीका है जिसे चेयरमैन माओ द्वारा बताया गया है और यही केवल सही तरीका है। हम निरुद्देश्य राजनैतिक प्रचार का आनन्द न लें बल्कि हमारा राजनैतिक प्रचार आवश्यक तौर पर सफाये के युद्ध को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने के लक्ष्य की सेवा करने के लिए हो। ... ... ... (पेज.**67ए** पैरा.**4**)
>
> ''यह सत्तर का दशक है। आइये, इस दशक को भारत के व्यापक शोषित और उत्पीड़ित जनता की मुक्ति का दशक बना दें। चेयरमैन माओ जो कि हमारे नेता हैं के साथ हम अवश्य विजय हासिल करेंगे।'' (चारू मजूमदार, Make The 1970's Decade of Liberation, पेज–**68**,पैरा–**5**,वही)

यहां चारू मजूमदार माओ का गलत हवाला दे रहे हैं। माओ ने ऐसा कोई तरीका दुनिया के विभिन्न देशों में क्रांतिकारी आंदोलन के जन्म व प्रचार के लिए नहीं बताया था। यहां चारू द्वारा प्रस्तुत की गयी बातें मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा की दृष्टि से गलत हैं।

चारू मजूमदार तब तो अतिवादिता की सारी हद को पार कर जाते हैं जब वे कम्युनिस्ट की नायाब परिभाषा देते हैं। उनके अनुसार कम्युनिस्ट वह व्यक्ति हो ही नहीं सकता है जिसने अपने हाथ वर्ग शत्रु के खून से न रंगे हों। चारू लिखते हैं,

> ''वह व्यक्ति जिसने वर्ग शत्रुओं के खून से अपने हाथ न रंगे हों उसे मुश्किल से ही कम्युनिस्ट कहा जा सकता है।
> (चारू मजूमदार, 'AFew Words about Guerrilla Action's, पेज–**71**,पैरा–**5**)

गनीमत है चारू मजूमदार ने इस परिभाषा की कसौटी में मार्क्स, लेनिन आदि शिक्षकों व अन्य कम्युनिस्टों को नहीं कसा। यह व्यक्तिगत हिंसा को महिमामंडित करना है। और हमारे देश का उस समय का इतिहास इस तरह की घटनाओं से भरा है। और सत्तर के दशक में तो इसका अच्छा–खासा बोलबाला था। यह आतंकवादी कार्यदिशा है।

चारू मजूमदार इसी तरह से तब भी अतिवामपंथ का परिचय दे रहे थे जब वे ट्रेड यूनियनों व जन संगठनों के निर्माण और उन्हें नेतृत्व देने के कार्य की आलोचना कर रहे थे। असल में वे मजदूर वर्ग की खासकर नवजनवादी व समाजवादी क्रांति में इतिहास में निभायी गयी महत्वपूर्ण और सबसे बढ़कर नेतृत्वकारी भूमिका से भारत के लिए सही सबक निकालने और दिशा निर्धारण करने के बजाय उसे नजरअंदाज कर रहे थे। चारू मजूमदार ने अपने शुरू के दस्तावेजों और लेखों में जहां यह रुख अपनाया वहीं बाद में उन्होंने कुछेक लेखों में मजदूर वर्ग के बीच काम करने पर जोर दिया यद्यपि वहां भी वे मजदूर वर्ग को को संगठित करने के स्थान पर वहां से कार्यकर्ता निकाल कर देहात के संघर्षों में उतारने की दिशा दे रहे थे। यह बात अभी भी हमारे देश के नवजनवादी क्रांति की मंजिल मानने वालों के दस्तावेजों में प्रमुखता से मिल जाती है। यहां एक समस्या और है। चारू के विचारों में सुसंगतता और निरंतरता का भी अभाव मिलता है।

वे अपने 'दस्तावेज सात' में लिखते हैं,

> ''यह युग सक्रिय प्रतिरोध आंदोलन का युग है। सक्रिय प्रतिरोध आंदोलन क्रांतिकारी जनगण की महान क्रांतिकारिता के स्रोत को खोलेगा। यह क्रांतिकारी लहर को पूरे भारत में फैला देगा। इसलिए इस युग में क्रांतिकारी कैडर का मुख्य कार्य कानूनी ट्रेड यूनियन या किसान एसोसिएशन (किसान सभा) आंदोलन को नेतृत्व देना नही हो सकता है। ट्रेड यूनियन या किसान एसोसिएशान (किसान सभा) आंदोलन वर्तमान युग में क्रांतिकारी लहर की मुख्य पूरक शक्ति भी नहीं हो सकते। इससे यह निष्कर्ष निकालना ठीक नही होगा कि ट्रेड यूनियन या किसान समितियां अप्रचलित (outmoded) हो गयी हैं। '' (चारू मजूमदार 'Document Seven, Take this opportunity' वही)

इस लेख में चारू मजूमदार आगे कहते हैं कि ट्रेड यूनियन और किसान सभाएं मुख्य तौर पर मार्क्सवादी–लेनिनवादी कार्यकर्ताओं और मजदूर–किसान जनता के बीच एकता का साधन हैं। यह एकता तभी गहरी हो सकती है जब उनके बीच सक्रिय प्रतिरोध आंदोलन का प्रचार किया जाये और इस सक्रिय प्रतिरोध आंदोलन में नेतृत्व देने के वास्ते कैडर और मजदूर वर्ग को किसान संघर्षों का सामना करने के

लिए आगे आना चाहिए। यहां आसानी से अति वामपंथी भटकावों को देखा जा सकता है। ट्रेड यूनियन के संदर्भ में मार्क्स, लेनिन आदि की शिक्षाओं को यहां भुला दिया गया है।

**1970** तक आते–आते उनका रुख और अधिक गलत होता चला गया है। अपने एक लेख 'मजदूरों के बीच हमारी पार्टी के कार्यभार' में वे लिखते हैं,

> ''पार्टी मजदूरों का वर्ग शत्रु के तख्ता पलट के लिए आक्रमण युद्ध छेड़ने का संगठन है जबकि ट्रेड यूनियन वर्ग शत्रु के आक्रमण के खिलाफ उनका रक्षात्मक संघर्ष लड़ने का संगठन है। लेकिन आज उनके लिए यह सम्भव नहीं है कि वे ट्रेड यूनियन संगठन से अपनी रक्षा करें। इसलिए ना तो ट्रेड यूनियन संगठित करने और न उन पर अपना नियंत्रण करना या ट्रेड यूनियन चुनावों की चिंता करना हमारा काम है। हमारा काम मजदूरों के बीच में गुप्त पार्टी संगठन बनाना है।'' (चारू मजूमदार,'Our Party's Tasks Among the Workers पेज– **84–85,** वही)

इस लेख में प्रस्तुत विचारों की तुलना यदि हम लेनिन की फस्तक 'क्या करें?' व ''वामपंथी कम्युनिज्म–एक बचकाना मर्ज'' से करें तो हम पायेंगे चारू किस तरह से स्थापित मार्क्सवादी–लेनिनवादी प्रस्थापनाओं से हटकर गलत बातें प्रसारित कर रहे थे। चारू मजदूरों में मात्र गुप्त पार्टी संगठन बनाने के काम को अपना काम बता रहे थे। वे ट्रेड यूनियनों के काम को या तो मजदूरों के स्वतः स्फूर्तता व ट्रेड यूनियन चेतना के या फिर वे इस किन्तु–परन्तु या परिस्थितियों का हवाला देकर संशोधनवादियों के हवाले कर दे रहे थे। वे यह गलत प्रस्थापना दे रहे थे कि मजदूरों के बीच पार्टी का काम मात्र गुप्त पार्टी संगठन बनाना है। असल में चारू मजूमदार मजदूर वर्ग की जनवादी क्रांतियों में निभायी गयी भूमिका समझ नहीं पाये और इसलिए उसके अनुरूप पार्टी को ठीक व सही नेतृत्व नहीं दे सके। मजदूर वर्ग में क्रांतिकारी कम्युनिस्टों के काम को चारू मजूमदार व सी.पी.आई. (एम.एल.) के दृष्टिकोण की वजह से भारी नुकसान हुआ। पार्टी मजदूर वर्ग से अलग–थलग पड़ गई। और आज भी यह जहरीली सोच क्रांतिकारी आंदोलन में असर रखती है। मजदूर वर्ग के नाम पर या उसके नेतृत्व की महज औपचारिक बातें करने से नवजनवादी क्रांति की मंजिल में भी मजदूर वर्ग का नेतृत्व कायम नहीं हो जाता है। वह न केवल अपने पार्टी के जरिये बल्कि अपने जरिये, अपने वर्ग के संगठित आंदोलन के जरिये भी इस क्रांति को नेतृत्व देता है। नवजनवादी क्रांति में भी मजदूर वर्ग उसका नेतृत्वकारी वर्ग रहा है। इस बात को चीन की नवजनवादी क्रांति के इतिहास से भी भली–भांति ढंग से समझा जा सकता है।

चारू मजूमदार के आठ दस्तावेजों का जिक्र करते हुए हमने कहा था कि व्यक्तिगत सफाये की लाइन उनकी लाइन की केन्द्रीय वस्तु है या दूसरे शब्दों में केन्द्रीय धुरी है जिसके इर्द–गिर्द उनकी सभी चीजें घूमती हैं। चारू मजूमदार की इन बातों पर गौर कीजिए,

> ''पार्टी एक्टिविस्ट ग्रुप का आज अर्थ यह है कि वे ''काम्बेट यूनिट्स'' हों। उनकी मुख्य जिम्मेदारी राजनैतिक प्रचार करने व प्रतिक्रियावादी शक्तियों के खिलाफ हमले करने की होगी। हमें हमेशा माओ त्से तुग की शिक्षा– 'आक्रमण केवल आक्रमण के लिए नहीं, आक्रमण केवल सफाये के लिए' को ध्यान में रखना चाहिए। जिन पर मुख्यतः आक्रमण किया जाना चाहिए वे हैं : **(1)** राज्य मशीनरी के प्रतिनिधि जैसे फलिस, मिलिट्री आफीसर **(2)** घृणित नौकरशाही **(3)** वर्ग शत्रु। इन हमलों का उद्देश्य हथियार इकट्ठा करना भी होना चाहिए। वर्तमान अवस्था में ये हमले शहर और देहात कहीं भी किये जा सकते हैं। हमें अपना ध्यान विशेष तौर पर किसान क्षेत्रों पर लगाना चाहिए।'' (चारू मजूमदार, Document six,'The Main task Today is the Struggle to Build Up the True Revolutinary Party Through Uncompromising Struggle Against Revisionism, 12-8-1966, पेज**–223,** पैरा–**II,** वही)

बाद में चारू मजूमदार के लेखों में राजनैतिक प्रचार की बातें और गौण हो गयी। 'मध्यपंथ' के हमले को वे पार्टी के भीतर से भी देख रहे थे। और यहां आते–आते उन्होंने सफाये की लड़ाई (battle of anihilation) को वर्ग संघर्ष का उच्चतम रूप घोषित कर दिया था। वे **1970** में पार्टी कांग्रेस में कहते हैं,

> ''अब मध्यपंथ का हमला पार्टी के भीतर से हो रहा है। आग्नेय अस्त्रों (fire-arms) के प्रयोग, निम्न बुर्जुआ बुद्धिजीवियों पर निर्भरता और सफाये के युद्ध पर पार्टी मध्यपंथ का सामना कर रही है।

(यहां मध्यपंथ का मतलब सही और गलत के साथ तालमेल करके बीच का रास्ता निकालने से है)

> ''यह आवश्यक तौर पर समझा जाना चाहिए कि ***सफाये का युद्ध न केवल वर्ग संघर्ष का उच्चतर*** रूप है बल्कि यह गुरिल्ला युद्ध का प्रारम्भ बिन्दु है। इस प्रश्न पर दो विच्युत्तियां इस प्रकार हैं:
>
> ''**1.** कुछ कामरेड इस बात पर सहमत हैं कि सफाया गुरिल्ला युद्ध का प्रारम्भ बिन्दु तो है परन्तु वर्ग संघर्ष का उच्चतर रूप नहीं है। यह दिमाग में पैदा होना चाहिए कि केवल वर्ग संघर्ष के विकास से ही समस्यायें हल हो सकती हैं।
>
> ''**2.** कुछ अन्य कामरेड हैं जो वर्ग संघर्ष को जमींदार की जमीन और सम्पत्ति पर कब्जा करने के लिए चलाते हैं परन्तु सफाये के युद्ध के लिए नहीं। इस तरह के कामरेड पतित हो जाते है, वे समाप्त हो जाते हैं। ये कामरेड यह नहीं समझ पाते हैं कि सफाया गुरिल्ला युद्ध का प्रारम्भ बिन्दु है।
>
> ''वर्ग संघर्ष सभी अन्य समस्याओं – मुक्त क्षेत्रों के निर्माण की समस्या व क्रांतिकारी सेना के निर्माण की समस्या – को हल करेगा।
>
> ''हमने कुछ स्थानों पर बिना वर्ग संघर्ष के सेना को विकसित करने की कोशिश की और हम असफल हो गये। ***बिना वर्ग संघर्ष – सफाये के युद्ध के गरीब किसान जनता*** की पहलकदमी को नहीं खोला जा सकता है, योद्धाओं की राजनैतिक चेतना को नहीं बढ़ाया जा सकता है, नव मानव का निर्माण नहीं किया जा सकता, जन सेना नहीं निर्मित की जा सकती है। केवल ***वर्ग संघर्ष–सफाये का युद्ध*** – छेड़ कर ही नये मानव का सृजन हो सकेगा, नया मानव जो कि मृत्यु को ललकारेगा और आत्म स्वार्थ के हर विचार से मुक्त होगा।'' (चारू मजूमदार, 'on the Political-Organisational Report' पेज–**23–24** वही, जोर हमारा)

चारू मजूमदार की राजनीतिक सांगठनिक लाइन को ये पैरे बहुत अच्छे ढंग से पेश करते हैं। चारू मजूमदार ने वर्ग संघर्ष को सफाये के युद्ध तक सीमित कर दिया। या उन्होंने जिस तरह से इस पर अत्याधिक जोर दिया है वह यह बतलाने को पर्याप्त है कि उनका वर्ग संघर्ष का आशय सफाये के युद्ध से ही है। उनके लिए सफाये का युद्ध हर चीज का स्रोत है। इससे किसानों की पहलकदमी खोली जा सकती है। नये मानव का सृजन किया जा सकता है। यहां सफाये का युद्ध सम्पूर्ण मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा को प्रतिस्थापित कर देता है। समाजवादी चेतना मजदूर वर्ग में या अन्य क्रांतिकारी वर्गों में भी कैसे ले जायी जाती है इस संदर्भ में लेनिन की बातों से उपरोक्त बातों का क्या सम्बन्ध है। 'क्या करें?' फस्तक में लेनिन ने एक उपशीर्षक 'अर्थवाद तथा आतंकवाद में क्या समानता है' के तहत जो बातें कहीं है अगर हम उनकी तुलना चारू मजूमदार की बातों से करें तो हम पायेंगे कि चारू मजूमदार की धारणाएं लेनिनवाद के अनुरूप नहीं हैं। वे सर्वथा गलत थे। यहां पर चारू ने माओ को भी गलत ढंग से उद्धृत किया है। चारू के विचारों का माओ की लोक युद्ध की धारणा से भी कुछ लेना–देना नहीं है। पहले ही हमने इस संदर्भ में लिखा है कि वह लिन प्याओ हैं जिनकी बातों का चारू मजूमदार अनुसरण कर रहे हैं।

चारू मजूमदार ने न केवल सफाये के युद्ध को महिमामंडित किया बल्कि साफ तौर पर कहा कि जो इसका विरोध करता है वह पार्टी में ही नहीं रह सकता है। वे कहते हैं,

''सभी संशोधनवादी, सभी ग्रुप चेयरमैन माओ का नाम ले रहे हैं और सफाये के युद्ध के मुद्दे पर हम पर हमला कर रहे हैं। इसीलिए साथियों जो भी इस सफाये के युद्ध का विरोध करता है हमारे साथ नहीं रह सकता है। उसे हम अपनी पार्टी में रहने की इजाजत नहीं दे सकते हैं।'' (चारू मजूमदार, वही, पेज.**25**)

## जनदिशा का सवाल

चारू मजूमदार के ऊपर दिये गये उद्धरणों से यह बात भी सुस्पष्ट हो रही होगी कि वे जनदिशा खासतौर पर माओ द्वारा अच्छे ढंग से सूत्रित जनदिशा का पालन नहीं करते थे। उनके द्वारा आतंकवादी कार्यदिशा से युक्त संकीर्ण सांगठनिक लाइन में जनदिशा के लिए कोई स्थान हो भी नहीं सकता था। चारू मजूमदार की कई बातों को हम पहले ही उद्धृत कर चुके हैं जिनमें उन्होंने मजदूर वर्ग में कार्य को सिर्फ गुप्त पार्टी संगठन तक ही सीमित कर दिया। था वे ट्रेड यूनियन को गठित व नेतृत्व देने के विरोधी थे।

## चीन की क्रांति की भौंडी नकल

चारू मजूमदार ने न केवल चीन की नवजनवादी क्रांति के मॉडल को भारत में लागू करने की कोशिश की बल्कि वे उन सूत्रीकरणों की भी जस की तस नकल करते थे जो एकदम चीन की क्रांति की विशेषताएं थी। जैसे, वे चीन की क्रांति के संदर्भ में स्टालिन के इस सूत्रीकरण की कि वहां सशस्त्र क्रांति सशस्त्र प्रतिक्रांति का सामना कर रही है को हू ब हू भारत में लागू कर देते हैं। वे लिखते हैं,

''... ... ... भारत में इस नये राजनैतिक युग को केवल स्टालिन की उस बात से ही समझा जा सकता है जो उन्होंने चीनी क्रांति के संदर्भ में कही थी। वह यह कि भारत में सशस्त्र क्रांति का युद्ध सशस्त्र प्रतिक्रांति से शुरू हो चुका है। क्रांतिकारी संघर्ष छेड़ना ही इसलिए क्रांतिकारी जनता का मुख्य रणकौशल हो सकता है।''

(चारू मजूमदार, 'Fight Against the Concerete Manifestations of Revinsionism,' पेज.36-37,वही)

इसी तरह वे चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के दौरान अस्तित्व में आयी क्रांतिकारी कमेटियों की भी नकल करते हैं और जल्दबाजी में उसे भारत में येन–केन प्रकारेण लागू करवाना चाहते हैं। वे यहीं पर नहीं रुकते बल्कि एक अजीबोगरीब सूत्रीकरण के जरिये वे भारत की क्रांति को सांस्कृतिक क्रांति का हिस्सा घोषित कर देते हैं। सिद्धान्तों के प्रति अवहेलना और सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण यह सब कुछ होता है। वे लिखते हैं,

''हम एक ऐसी व्यवस्था पेश करने की हिमायत करते हैं जिसमें हर स्तर पर प्रशासन क्रांतिकारी कमेटियों द्वारा किया जायेगा। यह वह चीज है जो पहले जनवादी क्रांतियों का हिस्सा नहीं रही है। यह महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति का योगदान है। इसे हम इसलिए अपना रहे हैं क्योंकि हमारा विश्वास है कि चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति वह तीसरी क्रांति है जिसने विश्व व्यवस्था को प्रभावित किया है। पहली क्रांति–महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति–के बाद हर देश की जनवादी क्रांति विश्व सर्वहारा समाजवादी क्रांति का हिस्सा बन गयी। दूसरी क्रांति–महान चीनी क्रांति–के बाद हर देश में क्रांति केवल लोकयुद्ध के पथ के जरिये ही सफलता हासिल कर सकती है। बिलकुल इसी तरह तीसरी क्रांति–महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति–की विजय के बाद हर देश की जनवादी क्रांति इस सांस्कृतिक क्रांति का अंग बन गयी है। ... ... ... '' (चारू मजूमदार, 'March Onward by Summing up the Experience of the Peasant Revolutionary struggle of India', पेज-54, पैरा-II वही)

यह अनावश्यक और गलत सूत्रीकरण है कि भारत की क्रांति महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति का अंग बन गयी थी। ऐसा कोई सूत्रीकरण महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के दौरान माओ अथवा चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने नहीं दिया था। यह बात ठीक है कि महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति ने नवसंशोधनवाद और पार्टियों के नेतृत्व में काबिज प्रतिक्रियावादी व संशोधनवादियों के खिलाफ पूरी दुनिया में संघर्षों की प्रेरणा व राह दिखाई। महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति ने समाजवाद में पूंजीवाद की फनर्स्थापना रोकने व सर्वहारा तानाशाही को बरकरार रखने के सिद्धान्त और तौर तरीके सुझाये। साथ ही उसने क्रांति से जुड़े हर प्रश्न को नये आयाम व व्याख्या प्रदान की। परन्तु यह कहना कि हर देश की क्रांति महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति का अंग बन गयी है, ठीक नहीं है। सीधे शब्दों में यह कहा जा सकता था कि दुनिया के हर देश की जनवादी क्रांति विश्व सर्वहारा क्रांति का अंग है। या बदली हुई परिस्थितियों में आज यह कहा जा सकता है कि जनवादी कार्यभारों को भी समाजवादी क्रांति ही आम तौर पर पूरा करेगी। अपने आप में चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति विश्व सर्वहारा क्रांति का ही हिस्सा थी। वह, 'पेरिस कम्यून', **1917** की अक्टूबर क्रांति की कड़ी में अगली महान सर्वहारा क्रांति थी।

## 'चीन के चेयरमैन हमारे चेयरमैन'

नवम्बर **1969** में चारू मजूमदार ने एक लेख 'चीन के चेयरमैन हमारे चेयरमैन हैं : चीन का रास्ता हमारा रास्ता है' शीर्षक से लिखा था। इस लेख में शीर्षक के अनुरूप चारू मजूमदार ने चीन की क्रांति के रास्ते को भारत का रास्ता घोषित कर दिया था। इसके साथ ही माओ को भारत का चेयरमैन भी घोषित कर दिया था। चारू ने इस नारे को अपने लेखों में कई बार दोहराया है। इस नारे की भारत में ही नहीं चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने भी आलोचना की थी। सोरेन बोस की चीन यात्रा के समय वहां के नेताओं के साथ हुई बातचीत में उन्होंने इसे गलत बताया था। एक तो चीन की पार्टी भारत की पार्टी नहीं हो सकती थी और दूसरा यह राष्ट्रीय भावनाओं के भी खिलाफ था।

इस नारे को किसी भी आधार पर जायज नहीं ठहराया जा सकता है। यह अंतर्राष्ट्रीयतावाद भी नहीं है जैसा कि इस नारे के समर्थन में दावा किया जाता है। यह उसी चीज की गलती का जारी रूप है जिसके तहत चारू चीन की क्रांति के विभिन्न पहलुओं के सार को पकड़ने, उसे भारत की परिस्थिति अनुरूप व्यवहार में लाने के स्थान पर उसके रूप को पकड़ लेते थे। सांगठनिक रूपों को सार्वभौमिक रूप का दर्जा देते थे और उसे जस का तस अपना लेते थे। लोकयुद्ध की धारणा, क्रांतिकारी कमेटियां आदि में इस चीज को हम पहले भी इस लेख में देख चुके हैं।

## तीसरे विश्वयुद्ध की घोषणा

मई **1970** में सी.पी.आई. (एम.एल.) की स्थापना कांग्रेस में अपने भाषण में चारू ने तीसरे विश्व युद्ध के शुरू होने की अजीबोगरीब घोषणा कर दी। उस समय कोई भी तीसरे विश्व युद्ध के अमेरिकी साम्राज्यवाद के कम्बोडिया पर किये गये हमले से छिड़ने की संभावना नहीं देख रहा था परन्तु चारू ने कांग्रेस के लिए इस घटना को इतना महत्वपूर्ण माना कि वे अपने भाषण की शुरुआत ही इस बात से करते हैं। स्पष्ट तौर पर यह लिन प्याओ की धारणाओं का चारू पर असर है। चारू कहते हैं,

''वर्तमान विश्व परिस्थिति की दो महत्वपूर्ण परिघटनाएं हैं। एक तरफ अमेरिकी साम्राज्यवाद का कम्बोडिया पर नग्न आक्रमण है ... ... अब वे एक के बाद दूसरे देश पर आक्रमण करेंगे। इस तरह यह तीसरे विश्व युद्ध की शुरुआत है। ... ...

''दूसरी तरफ वियतनाम, कम्बोडिया और लाओस की जनता का क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा चीन के नेतृत्व में अमेरिकी आक्रमणकारियों के खिलाफ लड़ने के लिए बन चुका है। ... ...'' (चारू मजूमदार, 'On the Political-Organizational Report', वही)

इस धारणा के साथ जब तीसरा विश्व युद्ध शुरू हो चुका है तब वे भारत के कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों से गृह युद्ध छेड़ने का आह्वान करते हैं।

सच तो यह है कि यह मनोगतवादिता की इंतहा ही है। हद तो यह है कि चारू मजूमदार के साथ पूरी पार्टी इस विश्लेषण को स्वीकार कर लेती है। कांग्रेस में इसका कोई विरोध नहीं होता है।

# भारत के शासक वर्ग का चरित्र और क्रांति की मंजिल

भारत के शासक वर्ग के चरित्र के निर्धारण के मामले में चारू की सोच व विश्लेषण लगातार बदलती रही है। वे एक समय भारत को आजाद और भारत के शासक वर्ग को पूंजीपति वर्ग मानते रहे थे परन्तु बाद में उन्होंने अपना यह मूल्यांकन बदल दिया। वे भारत को अर्द्ध औपनिवेशिक और भारत के शासक वर्ग को साम्राज्यवाद का दलाल कहने लगे। उन्होंने अपने विश्लेषण में क्यों परिवर्तन किये इसका कोई कारण उनके दस्तावेज अथवा लेखों में नहीं मिलता है। अपने पूर्व मूल्यांकन को बदलने के पीछे उनकी क्या सोच रही है अथवा वे पहले क्यों गलत थे बाद में क्यों सही। ऐसा मूल्यांकन उन्होंने क्यों बनाया या अपनाया था, इसकी कोई आत्मालोचना कहीं नहीं मिलती।

अपने पहले दस्तावेज में वे **1965** में कहते हैं

''***भारतीय बुर्जुआ*** अपने आंतरिक संकट को हल करने के लिए किसी राह को पाने में अक्षम है। शाश्वत खाद्य संकट जो कि मूल्य वृद्धि के साथ बढ़ता जा रहा है, पंच वर्षीय योजना के मार्ग में बाधायें खड़ी कर रहा है और इसके परिणामस्वरूप ***भारतीय बुर्जुआ*** के सामने इस संकट से उबरने के लिए इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है कि वह अधिक से अधिक आंग्ल–अमेरिकी साम्राज्यवादी पूंजी का आयात करे। साम्राज्यवाद पर इस निर्भरता के चलते ***पूंजीवाद*** का आंतरिक संकट दिन ब दिन बढ़ने के लिए अभिशप्त है। ***भारतीय बुर्जुआ*** अमेरिकी साम्राज्यवाद के निर्देश और अपने आंतरिक संकट के कारण लोकतंत्र की हत्या के अलावा और कोई रास्ता नहीं ढूंढ पा रहा है।'' (चारू मजूमदार 'Document One : Our Tasks in the Present Situation' वही, जोर हमारा)

भारतीय शासक वर्ग के चरित्र के बारे में उनका यह मूल्यांकन बाद में कुछ वर्षों बाद बदलता है। उनके मशहूर आठ दस्तावेजों में कमोबेश यही मूल्यांकन रहता है। 'चीन के चेयरमैन हमारे चेयरमैन हैं : चीन का रास्ता हमारा रास्ता है' लेख में वे भारत के पूंजीपति वर्ग को दलाल कहना शुरू कर देते हैं। यही बात फिर पार्टी की स्थापना कांग्रेस द्वारा कार्यक्रम में भी है।

अपने उपरोक्त लेख में वे लिखते हैं,

''भारतीय बुर्जुआ ब्रिटिश साम्राज्यवाद द्वारा पालित (fostered) और पनपाया (groomed) हुआ था, अपने चरित्र में दलाल है। इन्होंने साम्राज्यवाद की रक्षा जनता के क्रोध से की थी और जनता को सुधारवादी आंदोलन के दायरे में बांधे रखा और साम्राज्यवाद से सौदेबाजी करके अपने लिए रोटी के सूखे टुकड़े (crumbs) हासिल किये। साम्राज्यवाद की मदद से इन्होंने अपने आपको जनता के स्वाभाविक नेता के रूप में प्रस्तुत किया। ऐसा ही घटिया (trash) गांधी–वाद, निष्क्रिय प्रतिरोधात्मक, अहिंसा और चरखा भारत के दलाल पूंजीपति वर्ग की विचारधारा थी और केवल साम्राजयवाद की सेवा करती है।'' (चारू मजूमदार**] 'China's Chairman is Our Chairman: China's Path is Our Path',** पेज-46, वही)

चारू मजूमदार भारतीय शासक वर्ग के चरित्र की तरह भारत में क्रांति की मंजिल के सवाल पर भी उलटबासियां करते हैं। वे पीफल्स डेमोक्रेटिक रिवोल्यूशन (पी.डी.आर.) और न्यू डेमोक्रेटिक रिवोल्यूशन की अवधारणा को आपस में गुत्थमगुत्था कर देते हैं। **1970** का पार्टी कार्यक्रम में वे लोक जनवादी क्रांति और लोक जनवादी राज्य (पीफल्स डमोक्रेटिक स्टेट) की बात करते हैं। पी डी आर की बातें करते हुए वे चीन की नवजनवादी क्रांति में अपनाये गये रास्ते के अनुसरण की बातें भी साथ–साथ करते हैं। यह उनके इन सवालों पर गहरे चिंतन व समग्र विश्लेषण के अभाव को दिखाता है।

चारू मजूमदार यह निष्कर्ष निकालते हैं कि बिना जनवादी क्रांति हुए समाजवादी क्रांति सम्भव नहीं है। यहां मार्क्स, लेनिन द्वारा इतिहास के ठोस उदाहरणों के आधार पर 'प्रशियाई रास्ते' और 'चंसीसी रास्ते' जैसी बातों और वैज्ञानिक तर्कों को पूरी तरह भुला दिया जाता है। यह भी अजीब विरोधाभास है कि चीन के रास्ते की नकल करने वाले चारू मजूमदार ने कभी भी उस पद्धति का अनुसरण नहीं किया जिसके आधार पर माओ व चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने चीन में क्रांति की मंजिल और रास्ते को तय किया था। दीर्घकालिक लोक युद्ध के लिए जो आवश्यक शर्तें माओ ने बतायी उनकी चारू के लेखों में कहीं भी चर्चा नहीं मिलती है।

# देश की स्थिति के बारे में गलत निष्कर्ष

हम चारू मजूमदार की सैद्धान्तिक प्रश्नों पर बेरुखी, आतंकवादी व अतिवामपंथी कार्यदिशा, जन आंदोलनों एवं जन संघर्षों को सशस्त्र संघर्ष के लिए नुकसानदेह मानने और मजदूर वर्ग की पार्टी की जगह भूमिहीन व गरीब किसानों की पार्टी की अवधारणा पर चर्चा कर चुके हैं।

अब हम उनके द्वारा प्रतिपादित अन्य बातों को लेते हैं। वे भारत में क्रांति की शानदार परिस्थिति का हवाला बार–बार देते हैं। लेकिन वे भारत में असमान विकास को, राजनीतिक चेतना में भिन्न–भिन्न स्थिति को तथा सशस्त्र संघर्ष की अलग–अलग स्थितियों को नहीं देखते। वे यह नही देखते कि देश के कुछ ही इलाकों में सशस्त्र संघर्ष (उनके दृष्टि वाला) चल रहा है। वे जिन इलाकों में कोई संघर्ष नही है, वहां के लोगों में राजनीतिक व वर्ग चेतना का निम्न स्तर है, उन जगहों पर भी सफाये का अभियान चलाकर सशस्त्र संघर्ष या छापामार लड़ाई चलाने का आह्वान कर रहे थे। वे न तो सशस्त्र संघर्ष और वर्ग संघर्ष के बीच के सम्बन्ध को देख रहे थे और न ही सशस्त्र संघर्ष में व्यापक जनसमुदाय की भागीदारी की कल्पना कर रहे थे। वे अत्यन्त मनोगत तरीके से समूचे देश के लिए सफाये के अभियान का नुस्खा पेश कर रहे थे।

इसी प्रकार, वे मजदूरों एवं किसानों के हर आंशिक व आर्थिक मांग के संघर्ष को गलत तरीके से अर्थवाद घोषित कर देते थे। यह बात सही थी कि मजदूरों और किसानों के आंशिक व आर्थिक संघर्षों की अगुवाई सुधारवादी व संशोधनवादी कर रहे थे। लेकिन मजदूरों एवं किसानों की व्यापक आबादी के बीच से संशोधनवादियों एवं सुधारवादियों के प्रभाव को खत्म करने के लिए वे उनके दैनंदिन के संघर्षों –आर्थिक एवं राजनीतिक–को लड़ने के बजाय उनसे किनाराकशी करने और यहां तक कि उनको सशस्त्र संघर्ष में बाधक समझने की गलत अवस्थिति अपनाते हैं। वे किसी भी आर्थिक लड़ाई को यहां तक कि किसानों द्वारा जमीन पर कब्जा करने की लड़ाई को भी अर्थवाद

के दायरे में डाल देते हैं। वे घोषणा करते हैं कि किसान जमीन के लिए नहीं बल्कि राज्य सत्ता के लिए संघर्ष करते हैं। वे नक्सलबाड़ी के किसान उभार का यही नतीजा निकालते हैं कि वे जमीन के लिए नहीं बल्कि राजसत्ता के लिए संघर्ष कर रहे थे। यह गलत निष्कर्ष था।

इसी प्रकार उन्होंने अन्य कई महत्वपूर्ण मसलों पर गलत अवस्थितियां अपनायी जो निम्न लिखित हैं।

चारू मजूमदार ने कम्युनिस्ट पार्टी को मजदूर वर्ग की पार्टी बनाने के बजाय गरीब व भूमिहीनों की पार्टी गठित की। कृषि क्रांति के नाम पर इसने कम्युनिस्ट पार्टी के मजदूर वर्ग के हिरावल दस्ता के चरित्र को ही बदल दिया। हालांकि शब्दों में इसको मजदूर वर्ग की पार्टी कहना जारी रखा।

चारू मजूमदार ने संघर्ष का एक मात्र रूप सशस्त्र संघर्ष और सशस्त्र संघर्ष को व्यक्तिगत वर्ग दुश्मन सफाया अभियान के रूप में सीमित कर दिया। इसी व्यक्तिगत सफाये अभियान से उन्होंने जनमुक्ति सेना और आधार इलाके तक गठित करने की घोषणा कर दी। उन्होंने अपनी मनोगत इच्छा को वास्तविकता में जन मुक्ति सेना के गठन की घोषणा की थी। यह गलत घोषणा थी। न तो कोई जनमुक्ति सेना गठित हुई थी और न ही आतंकवादी कार्यदिशा के आधार पर वास्तविक अर्थों में जन मुक्ति सेना का गठन हो सकता था।

चारू मजूमदार ने संयुक्त मोर्चे के गठन पर गलत अवस्थिति अपनायी थी। वे यह घोषित कर चुके थे कि संयुक्त मोर्चा उन्ही ताकतों के साथ बनेगा जो सशस्त्र संघर्ष में लगे हों। संयुक्त मोर्चा के रणनीतिक व रणकौशलात्मक रूपों और उनके चरित्र को वे एक साथ ही रख कर वस्तुतः संयुक्त मोर्चा बनाने से इंकार करते थे।

इस तरह पार्टी, सशस्त्र संघर्ष और संयुक्त मोर्चे के बारे में चारू मजूमदार की गलत अवस्थितियां थी। माओ के अनुसार ये तीन जादुई हथियार हैं जो क्रांति को विजय तक ले जाने में समर्थ बनाते हैं। माओ ने कहा कि कम्युनिस्ट पार्टी जो मार्क्सवाद–लेनिनवाद की वैज्ञानिक शिक्षा से लैस हो, मार्क्सवाद–लेनिनवाद की सार्वभौमिक सच्चाइयों का देश विशेष की ठोस परिस्थितियों को लागू करने में सक्षम हो तथा आलोचना व आत्मालोचना का तरीका इस्तेमाल करती हो तथा व्यापक जन समुदाय को गोलबंद करने में सक्षम हो, वह क्रांति को विजय तक ले जा सकती है।

दूसरे, इस पार्टी के नेतृत्व में गठित सेना जो दुश्मन वर्गों को उखाड़ फेंकने में भूमिका निभाती हो।

तीसरे, दुश्मन वर्गों के विरुद्ध तमाम क्रांतिकारी वर्गों, तबकों और पार्टियों एवं व्यक्तियों का संयुक्त मोर्चा। इन तीनों ही मामलों में चारू मजूमदार की समझ गलत थी।

## III

# चारू मजूमदार की सांगठनिक लाइन

चारू मजूमदार की विचारधारात्मक लाइन की सहवर्ती सागठनिक लाइन थी। यह भ्रूण रूप में उनके आठ दस्तावेजों में मौजूद थी।

चारू मजूमदार को प्रतिष्ठा नक्सलबाड़ी के नेता के बतौर मिली थी। नक्सलबाड़ी किसान उभार के इर्द–गिर्द पहले नक्सलबाड़ी कृषक संग्राम सहायता समिति और बाद में कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की अखिल भारतीय तालमेल कमेटी बनी थी। इस तालमेल कमेटी में देश के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संशोधनवादी पार्टी– भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.) – को छोड़कर शामिल हो रहे थे। तालमेल कमेटी के भीतर चारू मजूमदार को नक्सलबाड़ी के नेता के बतौर मान्यता मिल चुकी थी।

तालमेल कमेटी ने अपने नाम के अनुरूप कार्य नहीं किया। इसने नाम तालमेल कमेटी का रखा और इसे पार्टी कमेटी की तरह चलाया। इसने अपनी दूसरी घोषणा में सभी ग्रुपों को भंग करने की सलाह दे डाली। यह तालमेल कमेटी के अधिकार क्षेत्र के बाहर की बात थी। इसका गठन तो सभी ग्रुपों के बीच संघर्ष के अनुभवों का आदान–प्रदान करने के साथ नक्सलबाड़ी की तरह के संघर्षों को छेड़ने, मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा का प्रचार–प्रसार करने तथा इसके आधार पर विभिन्न वर्गों के संघर्ष छेड़ने व मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा की रौशनी में पार्टी कार्यक्रम, रणनीति और रणकौशल तय करने के लिए किया गया था।

लेकिन रूप तालमेल कमेटी का रखकर और उसकी अंतर्वस्तु पार्टी की कायम करके आगे आने वाली पूफटों एवं बिखरावों के सारे बीज इसी दौर में बो दिये गये थे। इसी दौर में कई ग्रुप तालमेल कमेटी से बाहर हो गये थे।

तालमेल कमेटी में आंध्रप्रदेश के साथी अक्टूबर, **1968** में शामिल हुए थे। वे अखिल भारतीय तालमेल कमेटी के साथ कुछ मसलों पर मतभेद के साथ शामिल हुए थे। वे लम्बे समय तक भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.) के भीतर विचारधारात्मक– राजनीतिक संघर्ष चलाने के बाद उनसे अलग हुए थे। यही कारण है कि वे संशोधनवादियों के विरुद्ध संघर्ष में आंध्रप्रदेश के अधिकांश कार्यकर्ताओं को अपने पक्ष में खड़ा करने में सफल हो सके थे। अक्टूबर **1968** में शामिल होने के लगभग चार महिने के बाद फरवरी, **1969** में आंध्रप्रदेश तालमेल कमेटी को कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की अखिल भारतीय तालमेल कमेटी से नौकरशाहाना और मनमाने तरीके से अलग कर दिया गया। न तो अलग करने के प्रस्ताव पर उनके दृष्टिकोण को सुनने का मौका दिया गया और न ही अलग करने से पहले उन मुद्दों पर कोई सवाल–जवाब किया गया। हालांकि इस अलग करने के प्रस्ताव में यह कहा गया कि उनके साथ दोस्ताना व गैर दुश्मनाना रिश्ते रहेंगे। लेकिन थोड़े ही दिनों बाद आंध्रप्रदेश कम्युनिस्ट क्रांतिकारी कमेटी और उसके नेतृत्व को दुश्मनों की तरह पेश किया जाने लगा। यह चारू मजूमदार के नेतृत्व में चलने वाली कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की अखिल भारतीय तालमेल कमेटी की सांगठनिक लाइन की ही अभिव्यक्ति थी।

हालांकि इस मामले में आंध्रप्रदेश कम्युनिस्ट क्रांतिकारी कमेटी ने धैर्यपूर्वक
मार्क्सवादी–लेनिनवादी अवस्थितियों पर खड़े होकर क्रांतिकारी जनदिशा का पक्षपोषण किया फिर भी न तो कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की अखिल भारतीय तालमेल कमेटी ने और न ही बाद में बनने वाली भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माले) ने उनकी इन अवस्थितियों से कुछ भी सीखने की कोशिश की। उलटे उन्हें 'मध्यमार्गी', 'संशोधनवाद की निकृष्ट किस्म' और 'माओ विचारधारा का झंडा लेकर माओ विचारधारा का विरोध करने वाला' घोषित कर दिया गया।

आंध्र प्रदेश तालमेल कमेटी को अलग करने से पहले कहा जाता था कि अभी पार्टी बनाने का वक्त नहीं आया। लेकिन जैसे ही आंध्र प्रदेश कमेटी को बाहर किया गया वैसे ही पार्टी बनाने का वक्त आ गया। **7** फरवरी, **1969** को आंध्रप्रदेश तालमेल कमेटी को बाहर का रास्ता दिखाते हुए प्रस्ताव लिया गया। **8** फरवरी, **1969** को पार्टी गठन के लिए प्रस्ताव लिया गया। **22** फरवरी **1969** को पार्टी गठित की गयी और **1** मई, **1969** को इसकी घोषणा की गई।

आंध्रप्रदेश तालमेल कमेटी के रहते व्यक्तिगत शत्रुओं के सफाये की लाइन के आधार पर पार्टी नहीं बन सकती थी। क्योंकि वही सिद्धान्तनिष्ठ होकर इसके विरुद्ध संघर्ष कर रही थी।

इस प्रकार, जल्दबाजी में, बिना पर्याप्त विचारधारात्मक–राजनीतिक तैयारी के, देश के कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के अच्छे खासे हिस्से को बिना शामिल किये बल्कि यह कहना ज्यादा सही होगा कि शामिल हुए लोगों को भी अनावश्यक तरीके से बाहर करके आतंकवादी कार्यदिशा के आधार पर एक नयी पार्टी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माले) का गठन कर दिया गया। अब तक चारू मजूमदार की आतंकवादी कार्यदिशा के साथ–साथ संकीर्णतावादी सांगठनिक लाइन भी पूरी तरह उभर कर आ चुकी थी।

अतः भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माले) वास्तविक अर्थों में कम्युनिस्ट पार्टी नहीं थी। यह उस समय मौजूद कई ग्रुपों में एक ग्रुप थी। राजनीतिक तौर पर आतंकवादी कार्यदिशा व सांगठनिक तौर पर संकीर्णतावादी कार्यदिशा पर आधारित यह कम्युनिस्ट पार्टी नहीं हो सकती थी। इससे अपेक्षाकृत बेहतर समझ रखने वाले, विशेष तौर पर क्रांतिकारी जनदिशा के सम्बन्ध में, इससे बाहर थे।

वैसे चारू मजूमदार के आठ दस्तावेजों में पार्टी गठन व निर्माण सम्बन्धी संकीर्णतावादी रुझान मौजूद है। उनके पहले ही दस्तावेज में कहा गया है :

'' हमारे सांगठनिक नारे

'' **1.** प्रत्येक पार्टी सदस्य कम से कम पांच सदस्यों का एक एक्टिविस्ट ग्रुप गठित करे। वह इस एक्टिविस्ट ग्रुप के सदस्यों की राजनीतिक शिक्षा करे।

'' **2.** प्रत्येक पार्टी सदस्य इस बात की देख भाल करे कि उस ग्रुप का कोई भी सदस्य फलिस के सामने उजागर न हो।

'' **3.** हर एक्टिविस्ट ग्रुप के पास मीटिंग करने के लिए गुप्त स्थान हो। यदि आवश्यक हो तो एक या दो गुप्त ठिकाने का इंतजाम किया जाय।

'' **4.** प्रत्येक ग्रुप के पास एक निश्चित व्यक्ति संपर्क के लिए हो।

'' **5.** गुप्त दस्तावेज छिपाने के लिए एक स्थान का इंतजाम किया जाय।

'' **6.** इस ग्रुप का कोई भी सदस्य जैसे ही राजनीतिक शिक्षा व कार्य में दक्ष हो जाये वैसे ही उसे पार्टी का सदस्य बना दिया जाय।

'' **7.** जैसे ही वह पार्टी सदस्य बन जाये वैसे ही एक्टिविस्ट ग्रुप का उससे कोई सम्बन्ध न रहे।'' (प्रथम दस्तावेज, वर्तमान परिस्थिति में हमारे कार्यभार, चारू मजूमदार Historical and polemical Documents of communist Movement in india, P-207)

इसके बाद वे कहते हैं कि इस सांगठनिक कार्यशैली को दृढ़तापूर्वक लागू करना चाहिए। यह संगठन खुद भविष्य में क्रांतिकारी संगठन की जिम्मेदारी ग्रहण कर लेगा।

उनके इस दस्तावेज में कहीं भी लेनिनवादी सांगठनिक उसूलों के आधार पर बनने वाली कम्युनिस्ट पार्टी का जिक्र भी नहीं है। यहां एक्टिविस्ट ग्रुप हैं, पार्टी सदस्य हैं। लेकिन पार्टी को चलाने वाले सांगठनिक उसूल लेनिनवादी उसूल नहीं हैं। क्रांतिकारी जन समुदाय को गोलबंद करने का काम सिरे से गायब है।

दूसरे दस्तावेज में वे लिखते हैं,

''पहला, संगठन के सभी काम भविष्य में पार्टी के पूरक कार्यों के बतौर किये जायेंगे। दूसरे शब्दों में जन संगठनों को पार्टी के मुख्य उद्देश्य की सेवा के हिस्से के बतौर इस्तेमाल किया जायेगा। इस कारण से, स्वाभाविक तौर पर इन संगठनों पर पार्टी का नेतृत्व स्थापित किया जायेगा।

'' दूसरा, आज से तुरंत पार्टी का सारा प्रयास नये से नये कैडरों को भर्ती कर उन्हें लेकर एक्टिविस्ट ग्रुप बनाने का होगा। यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि संघर्षों के आने वाले दौर में जनता को गैर कानूनी मशीनरी के जरिये शिक्षित किया जायेगा। इसलिए अब हर पार्टी सदस्य को गैर कानूनी काम करने का आदी होना होगा। गैर कानूनी काम करने का आदी होने के लिए हर एक्टिविस्ट ग्रुप का एक बुनियादी काम गैर कानूनी पोस्टर चिपकाना होगा। केवल इस प्रक्रिया के तहत ही वे आने वाले संघर्षों के युग में नेतृत्व देने वाले संघर्षों की निडर (bold) कोर की तरह कार्य करने में सक्षम होगे। अन्यथा, क्रांति निम्न पूंजीपति वर्ग के निठल्ले स्वप्न के स्तर तक गिर जायेगी।

'' तीसरा, पार्टी इन सक्रिय संगठनों के जरिये जन संगठनों के ऊपर अपने नेतृत्व को स्थापित करने में सक्षम होगी। इस तरह अब से हमें एक्टिविस्ट ग्रुपों के सदस्यों की इस बात में मदद करनी होगी कि वे बेझिझक होकर जन संगठनों के नेताओं और कार्यों की आलोचना कर सकें।

'' चौथा, जन संगठनों में किसी कार्य को किये जाने से पहले जन संगठनों के काम की पार्टी में चर्चा की जायेगी और निर्णय लिये जायंगे। यह ध्यान रखा जाये कि पार्टी में लम्बे समय से जनसंगठनों से सम्बन्धित नीति को गलत ढंग से लागू किया गया है। पार्टी के निर्णयों पर बहस करने को जनवादी केन्द्रीयता नहीं कहा जा सकता है। यह सोच मार्क्सवाद के अनुरूप नहीं है। इस प्रकार की पूरी सोच का निष्कर्ष यह निकलेगा कि पार्टी कार्यक्रम को नीचे से स्वीकारा जाय। अगर इसे नीचे से स्वीकारा जायेगा, तब सही मार्क्सवादी तरीका नहीं लागू किया जा सकेगा और इस तरह की गतिविधियों में अनिवार्य रूप से विचलन होंगे। ... ... ...'' चारू मजूमदार, दूसरा दस्तावेज, "Make the People's Democratic Revoulution Successful by Fighting against Revisionism" वही, अनुवाद हमारा)

अपने इसी लेख में वे आगे कहते हैः

''... ... जनवादी केन्द्रीयता का मार्क्सवादी सच यह है कि उच्चतर नेतृत्व द्वारा दिये गये निदेशों का निश्चित रूप से पालन किया जाय। क्योंकि पार्टी का सबसे बड़ा नेता वह है जो कि अपने को दृढ़तापूर्वक एक मार्क्सवादी के रूप में आंदोलनों के एक लम्बे दौर और विचारधारात्मक बहसों के जरिये स्थापित करता है। (वही, अनुवाद हमारा)

जैसा कि ऊपर उद्धृत चारू मजूमदार के लेखांशो से स्पष्ट है कि उनकी सांगठनिक सोच में यह बात गहराई से जड़ जमाये हुए थी कि हथियारबंद संघर्ष चलाने के लिए, या कृषि क्रांति करने के लिए व्यापक जनसमुदाय को जोड़ने वाले संगठनों की और संघर्ष के अन्य रूपों की जरूरत नहीं है, इसलिए वे न तो कानूनी और गैर कानूनी कामों में तालमेल करने और न ही खुले और गुप्त संगठनों व कार्रवाइयों में तालमेल की चर्चा करते हैं। यह बहुत स्वाभाविक है कि आतंकवादी कार्यदिशा अपने साथ संकीर्णतावादी सांगठनिक कार्य दिशा लाती ही है।

चारू मजूमदार के लिए संघर्ष का एकमात्र रूप है सशस्त्र संघर्ष और वह भी वर्ग संघर्ष से कटा हुआ वर्ग दुश्मनों के व्यक्तिगत सफाये का संघर्ष और संगठन का एकमात्र रूप है गुप्त गुरिल्ला दस्ते और गुप्त पार्टी संगठन।

इसको उनके एक अन्य लेख से अच्छी तरह समझा जा सकता है, वे लिखते हैं,

''क्या यह संभव है कि गुरिल्ला युद्ध बिना जनांदोलन और जनसंगठन के खड़ा किया जा सकता है?

'' क्रांतिकारी किसानों ने अपने संघर्षों के द्वारा प्रदर्शित किया है कि न तो जनांदोलन और न ही जन संगठन गुरिल्ला युद्ध छेड़ने के लिए अपरिहार्य हैं। क्रांतिकारी राजनीति के फैलाव व प्रसार के लिए जो आवश्यक है वह है, चेयरमैन माओ के विचार। और यह केवल गुप्त पार्टी संगठनों के जरिये ही किया जा सकता है। गुप्त पार्टी संगठन द्वारा बनाये गये छापामार दस्ते और उसे वर्ग शत्रु के खिलाफ इस्तेमाल करने से छापामार युद्ध छेड़ना और साथ ही जनता को एकजुट करना सम्भव होगा। छापामार 'कार्रवाइयों' के फैलाव के साथ इन संघर्षों में व्यापक जनता की भागीदारी में मदद मिलेगी। जन संगठन और जनांदोलन खुले और आर्थिक प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं और क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं को शत्रु की निगाहों में ले आते हैं जिससे शत्रु को हमला करने में आसानी होती है। इसलिए ***खुले जनांदोलन*** और ***जन संगठन*** गुरिल्ला युद्ध के विकास और विस्तार की राह में बाधायें हैं।'' (चारू मजूमदार, "March onward by summing up the experience of the Pesant Revolutionary Struggle of India, Liberation Anthology Part-II, प`--56-57 अनुवाद हमारा)

चारू मजूमदार की संकीर्णतावादी सांगठनिक लाइन भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) के गठन और उसके बाद कांग्रेस में अपनी समग्रता में आ चुकी थी। इसका विनाशकारी प्रभाव इतना व्यापक था कि चारू की मूल बात से सहमत होने के बावजूद किन्तु–परन्तु लगाने वालों को भी पार्टी से निकाल बाहर कर दिया जाता था। इसी के साथ ही उनको 'संशोधनवादी' 'गद्दार' और अन्य गालियों से नवाजा जाता था। पार्टी कांग्रेस से पहले अन्य लोगों के अलावा हावड़ा जिला कमेटी के कुछ सदस्यों ने पार्टी के राजनीतिक प्रस्ताव की आलोचना की थी। इस आलोचना के कारण उन्हें पार्टी से निकाल दिया गया। इसी प्रकार उत्पल दत्त ने औपनिवेशिक क्रांति में आम दिशा के सम्बन्ध में कुछ सवाल उठाये थे। इन सवालों पर बहस मुबाहिसा करने के बजाय उन्हें पार्टी से बाहर का रास्ता दिखाया जाता है। असित सेन ने, जो **1966** में गठित संशोधनवाद के विरुद्ध अंतः पार्टी संघर्ष के कमेटी के सह संस्थापक थे, ने जब मजदूर वर्ग पर आधारित पार्टी गठित करने का सवाल उठाया तो उनको भी पार्टी से बाहर कर दिया गया। **1968** में सोवियत सेनाओं ने चेकोस्लोवाकिया में हमला किया था, उस समय पहली बार चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने सोवियत साम्राज्यवादी शब्द का इस्तेमाल किया था। उस समय परिमल दास गुप्त ने सोवियत संघ को सामाजिक साम्राज्यवादी कहने पर ऐतराज किया था। इस पर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) ने उन्हें पार्टी से बाहर निकाल दिया।

इस पर देखिये, **1970** की भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले) की आठवीं काग्रेस में चारू मजूमदार क्या कहते हैं,

''पार्टी के भीतर दो लाइनों का संघर्ष है और यह जारी रहेगा। हम गलत लाइन का अवश्य विरोध करेंगे और उसे परास्त करेंगे। लेकिन हम अवश्य ही मध्यपंथ (centrism) के प्रति सतर्क रहेंगे। मध्यपंथ संशोधनवाद के सबसे बुरे रूप की एक किस्म है। अतीत में क्रांतिकारी तत्वों द्वारा संशोधनवाद को बार–बार हराया गया। परन्तु मध्यपंथ हमेशा इन सफलताओं पर कब्जा करके पार्टी को संशोधनवाद की ओर ले गया। हमें अवश्य ही मध्यपंथ से घृणा करनी चाहिए।

चुनाव के बहिष्कार के प्रश्न पर नागी रेड्डी कहते हैं, 'हां, हम इसे स्वीकार करते हैं परन्तु एक निश्चित इलाके में निश्चित समय के लिए ही होना चाहिए। जहां संघर्ष नहीं होगा वहां हम चुनाव में भागीदारी करेंगे।' यह नागी रेड्डियों की लाइन है। यह मध्यपंथ है। हमने इसके खिलाफ संघर्ष किया और नागी रेड्डी को अपने संगठन से बाहर फेंक दिया। सोवियत सामाजिक साम्राज्यवाद के बारे में कुछ कहते हैं, 'सोवियत नेता संशोधनवादी हैं, लेकिन वे साम्राज्यवादी कैसे हो सकते हैं? वहां एकाधिकारी पूंजी का विकास कहां है? ये मध्यपंथी है। हमने इनसे संघर्ष किया और अपनी पार्टी से निकाल फेंका। इसी तरह मध्यपंथी उस समय ट्रेड यूनियनों व मजदूर वर्ग पर आधारित पार्टी का प्रश्न उठाते हैं जब किसानों पर भरोसा करके सशस्त्र वर्ग संघर्ष को विकसित करना है। हमने असित सेन एण्ड कम्पनी से इन मुद्दों पर संघर्ष किया और उन्हें पार्टी से बाहर निकाल दिया। (चारू मजूमदार, 'On the Political-Organisational Report, पृष्ठ-23, पैरा-3, वही, अनुवाद हमारा)

इसी में आगे वे कहते हैं,

''सभी संशोधनवादी, सभी ग्रुप चेयरमेन माओ का नाम ले रहे हैं और सफाये के युद्ध के मुद्दे पर हम पर हमला कर रहे हैं। इसलिए साथियों, जो भी इस सफाये के युद्ध का विरोध करता है, हमारे साथ नहीं रह सकता। उसे हम अपनी पार्टी में रहने की इजाजत नहीं दे सकते।'' (चारू मजूमदार वही, पृष्ठ.**25**)

चारू मजूमदार के व्यक्तिगत प्राधिकार कायम करने की भावना भ्रूण रूप में पहले उद्धृत एक हिस्से में दी जा चुकी है। **1970** में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) की आठवीं कांग्रेस में यह और ज्यादा भौंडे एवं नंगे रूप में सामने आ गयी। उस समय कांग्रेस के समक्ष यह प्रस्ताव रखा गया कि चारू मजूमदार को भारतीय क्रांति का प्राधिकार स्वीकार कर लिया जाय। जब कांग्रेस में कुछ प्रतिनिधियों ने इस पर विरोध किया तो चारू मजूमदार ने इस सवाल को बहस से अलग कर दिया। इस कांग्रेस के ठीक पहले चारू मजूमदार को क्रांतिकारी प्राधिकार स्थापित करने सम्बन्धी एक लेख ''क्रांति में विजय हासिल करने के लिए हमें क्रांतिकारी प्राधिकार स्थापित करना होगा'' शीर्षक से लिबरेशन में प्रकाशित हुआ था। उसमें कहा गया था,

''आज हमारा कार्यभार है कि हम पार्टी और क्रांति के सभी स्तरों पर कामरेड चारू मजूमदार के नेतृत्व के प्राधिकार को दृढ़तापूर्वक स्थापित करें। ... ...

''आज परिस्थिति ऐसी है कि यदि हम संशोधनवाद और प्रतिक्रियावाद के आक्रमण का सामना करते हुए क्रांति को आगे बढ़ाना चाहते हैं तो हमें चारू मजूमदार के क्रांतिकारी प्राधिकार को स्थापित करने के लगातार और गंभीर संघर्ष छेड़ने होंगे। हमारा नारा है : 'अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हम निश्चित रूप से चेयरमैन माओ, वाइस चेयरमैन लिन प्याओ और महान गौरवशाली तथा चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का अनुसरण करें एवं साथ ही साथ महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति की वैश्विक शिक्षाओं को लागू करेंऋ राष्ट्रीय स्तर पर हम चेयरमैन माओ, वाइस चेयरमैन लिन प्याओ और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति वफादार रहे साथ ही हम चारू मजूमदार के नेतृत्व के क्रांतिकारी प्राधिकार को पूरे तौर पर स्वीकार करें।'' (सोरेन बोस, 'To Win Victory in the Revolution We Must Establish Revolutionary Authority,' Page-80-81)

इस क्रांतिकारी प्राधिकार की धारणा से एक ऐसे नेतृत्व को स्थापित किया जा रहा था जो अब किसी भी कमेटी से ऊपर था। वह अब सामूहिक नेतृत्व के विकल्प के बतौर पेश किया जा रहा था और दरअसल व्यवहार में उसे लागू किया जा रहा था। **1970** की पार्टी कांग्रेस में इस मसले पर बहस तो किनारे लगा दी गयी लेकिन चारू मजूमदार को भारतीय क्राति का प्राधिकार कहने की प्रक्रिया जारी रही।

यही कारण है कि मई **1970** में पार्टी कांग्रेस में चुनी गयी केन्द्रीय कमेटी की लम्बे समय तक कोई बैठक ही नहीं हुई। एक बार पोलित ब्यूरो की बैठक हुई तो उसमें सिर्फ यही तय हुआ कि केन्द्रीय कमेटी की बैठक नवम्बर **1970** में होगी। जो नहीं हुई। लेकिन इस दौरान जिस कमेटी या नेता ने चारू मजूमदार की लाइन पर तनिक भी किन्तु–परन्तु के साथ सवाल उठाये, उसे पार्टी से निष्कासित कर दिया गया। उसे संशोधनवादी और गद्दार घोषित कर दिया गया। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) के भीतर सबसे पहले बड़े शिकार पॉलित ब्यूरो सदस्य सुशीतल राय चौधरी बने। उन्होंने कुछ सवाल उठाये थे। उन्हें निष्कासित कर दिया गया। इसके बाद तो तांता लग गया। बिहार राज्य कमेटी ने कुछ सवाल उठाये तो उसे भंग करके समान्तर राज्य कमेटी गठित की गयी। उत्तर प्रदेश कमेटी ने सवाल उठाये तो उसे भंग कर दिया गया। और यह सब काम चारू मजूमदार या उनके कुछ घनिष्ट सहयोगी कर रहे थे। कोई कमेटी व्यवस्था नहीं लागू थी। केन्द्रीय कमेटी के नाम पर सिर्पफ चारू मजूमदार सक्रिय होकर अपनी ही कमेटी के सदस्यों को निष्कासित करके गद्दार घोषित कर रहे थे। अभी तक अलग होने वाले या निष्कासित होने वाले किसी भी सदस्य ने चारू मजूमदार की आतंकवादी कार्यदिशा पर कोई सवाल नहीं उठाये थे। लेकिन चारू मजूमदार की संकीर्णतावादी सांगठनिक लाइन के चलते समूची केन्द्रीय कमेटी के एक–एक सदस्य या तो भारतीय राज्य द्वारा मारे जा रहे थे या वे जेलों में डाले जा चुके थे या चारू मजूमदार से अलग हो चुके थे या निष्कासित किये जा चुके थे। **1972** में चारू मजूमदार की गिरफ्रतारी के समय **70** में चुनी गई केन्द्रीय कमेटी का महज एक सदस्य उनके साथ रह गया था और वह सदस्य भी कांग्रेस में उपस्थित नहीं था। उसके लिए उसकी अनुपस्थिति में ही जगह खाली रखी गयी थी।

लेकिन इसी दौरान क्रांतिकारी प्राधिकार वाली सांगठनिक लाइन और ज्यादा बलवती होती गयी। बाद में इसे चारू मजूमदार की 'निर्भूल क्रातिकारी लाइन' कहा जाने लगा। यानी चारू मजूमदार कोई गलती या भूल कर ही नहीं सकते। व्यक्ति के बारे मे यह गैर द्वन्द्ववादी सोच स्थापित की गयी।

एक तरफ **1970** में गठित पार्टी नेतृत्व विहीन होती जा रही थी। संघर्ष के इलाके संकुचित होते जा रहे थे। पार्टी और ज्यादा ग्रुपों में बंटती जा रही थी, दूसरी तरफ चारू मजूमदार की 'निर्भूल क्रातिकारी लाइन' कुछ भी सीखने के लिए तैयार नही थी। अपनी गलतियों के प्रति गम्भीर जिम्मेदाराना कम्युनिस्ट दृष्टिकोण गायब था। कई संगठनों और व्यक्तियों ने आलोचनाएं की थी। लेकिन चारू मजूमदार में आत्म आलोचना का पक्ष ही गायब था। वे निर्भूल हो चुके थे।

इतना ही नहीं **1970** में पार्टी कांग्रेस के बाद भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) का एक प्रतिनिधि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के साथ विचार विमर्श के लिए गया था। वहां उस प्रतिनिधि से चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधियों का विचार विमर्श हुआ था। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने भारत की कम्युनिस्ट पाटीं (मा.ले.) की बिरादराना आलोचना की थी। उक्त आलोचना की रिपोर्ट चारू मजूमदार के पास पहुंच गयी। लेकिन इस पर भी चारू मजूमदार ने चुप्पी साध ली। इस रिपोर्ट को न तो रद्द करने का साहस उन्होंने दिखाया और न ही इस रिपोर्ट के आधार पर उन्होंने कोई आत्म आलोचना की।

दरअसल, चारू मजूमदार की सांगठनिक लाइन में लेनिनवादी पार्टी की अवधारणा सिरे से गायब थी। वे पार्टी के भीतर धैर्यपूर्वक दो लाइनों के संघर्ष को संचालित करने से परहेज करते थे। वे पार्टी के भीतर चलने वाले विचारधारात्मक –राजनीतिक संघर्ष को अपने क्रांतिकारी प्राधिकार और निर्भूल क्रांतिकारी लाइन के लिए खतरा समझते थे। इसीलिए उनकी आलोचना की पद्धति मरीज को बचाने की नहीं बल्कि मर्ज सहित मरीज को मारने की होती थी। आत्म–आलोचना उनके लिए वर्जित था। वे पार्टी के भीतर अंतरविरोधों को समाज में मौजूद अंतरविरोधों का प्रतिबिम्ब व प्रतिफलन नहीं मानते थे। न ही वे समाज में चल रहे वर्ग संघर्ष का पार्टी में प्रतिविम्बन देखते थे। इसलिए उनके अनुसार जो नहीं चल रहा है, वह प्रतिक्रांतिकारी है, संशोधनवादी है व साम्राज्यवादियों का एजेण्ट है।

अंत में निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि नक्सलबाड़ी किसान उभार ने हमारे देश के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन को जो आवेग प्रदान किया था, इसने देश के लाखों–करोड़ों मजदूरों–किसानों–छात्रों–नौजवानों व बुद्धिजीवियों में भारत में क्रांति की जो उम्मीदें जागृत की थीं उन पर चारू मजूमदार की आतंकवादी कार्यदिशा एवं संकीर्णतावादी सांगठनिक दिशा ने तुषारापात कर दिया। उस समय यह लगने लगा था कि भारत में संशोधनवाद से विच्छेद होने के बाद एक सही कम्युनिस्ट पार्टी अस्तित्व में आयेगी। लेकिन नक्सलबाड़ी की प्रतिष्ठा ने चारू मजूमदार को संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष करने वालों में प्रथम स्थान दे दिया। हालांकि उस समय संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष करने में कई कामरेडों ने ज्यादा गहराई से विचारधारात्मक संघर्ष चलाया था। इसके बाद चीन की कम्युनिस्ट पार्टी से नक्सलबाड़ी और भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) के समर्थन ने चारू की आतंकवादी कार्यदिशा के विरुद्ध संघर्ष को और कठिन बना दिया।

जैसा के पहले कहा जा चुका है कि चारू मजूमदार की आतंकवादी कार्यदिशा एवं इसकी सहवर्ती सांगठनिक कार्यदिशा के लिए उत्तरदायी उनका निम्न पूंजीपति वर्ग का अधैर्य रहा है। इसी के साथ व्यक्तिवाद, मनोगतवाद और कमानवाद के वे शिकार थे।

यहां पर हम सिर्फ चारू मजूमदार का नाम ले रहे हैं, क्योंकि वे नेतृत्व के शीर्ष पर थे। लेकिन उपरोक्त सारी गलतियों के लिए कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की अखिल भारतीय तालमेल कमेटी का नेतृत्व एवं बाद में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) का नेतृत्व कमोबेश जिम्मेदार रहा है।

चारू मजूमदार की आतंकवादी व अतिवामपंथी कार्य दिशा एवं इसकी सहवर्ती संकीर्णतावादी सांगठनिक कार्यदिशा के लिए मददगार लिन पियाओ की विचारधारा रही है। चारू के विभिन्न लेखों में लिन पियाओ के विचारों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। मसलन परिस्थितियों के मनोगत आकलन में लिन पियाओ का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है।

चूंकि उस समय लिन पियाओ चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का आधिकारिक प्रवक्ता था, इसलिए उस समय के सभी कम्युनिस्ट क्रांतिकारी लिन पियाओ को उद्धृत करते थे। चारू मजूमदार भी यही कर रहे थे। उन पर लिन पियाओ का प्रभाव था, फिर भी अतिवामपंथी व आतंकवादी कार्यदिशा की जड़ें उनके निम्न पूंजीवादी दृष्टिकोण में थी।